MAA OMWATI DEGREE COLLEGE HASSANPUR (PALWAL)

Notes

B.COM 1st Sem

Business Economics -I

No.	Title	Page No.
	Unit – I	
1.	अर्थव्यवस्था की आधारभूत समस्याएँ	1 – 10
	• उत्पादन संभावना वक्र	
	• उत्पादन संभावना तालिका	
	• उत्पादन संभावना वक्र तथा आधारभूत समस्याओं का समाधान	
2.	कीमत संयंत्र का कार्यकरण	11 – 20
	• कीमत संयंत्र की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं में क्या भूमिका है?	
	• पूँजीवादी अर्थव्यवस्था	
	• समाजवादी अर्थव्यवस्था	
	• मिश्रित अर्थव्यवस्था	
3.	मांग की लोच	21 – 31
	• माँग की लोच की श्रेणियाँ	
	• माँग की की कीमत लोच की माप	
	• आगम की धारणाएँ	
	: औसत आगम	
	: कुल आगम	
	- सीमान्त आगम	
	• माँग की कीमत लोच का महत्व	
4.	पूर्ति का सिद्धान्त	34 – 35
	• पूर्ति वक्र	
	• पूर्ति का नियम	
	• मान्यतायें	
	• पूर्ति की लोच का महत्व	
	Unit – II	
5.	उत्पादन का सिद्धान्त	36 – 50
	• अर्थ	
	• उत्पादन फलन	
	• उत्पादन फलन के प्रकार	
	• उत्पादन का नियम	
	- साधन के प्रतिफल	
	: पैमाने के प्रतिफल	
	• घटते बढ़ते अनुपात का नियम	
	- मान्यतायें	
	- उत्पादन की तीन अवस्थायें	
	- लागू होने के कारण	

S.No.	Title	Page No.
	• पैमाने के प्रतिफल - पैमाने के प्रतिफल के पक्ष • पैमाने के प्रतिफल के नियम तथा सम-उत्पाद विश्लेषण - सम उत्पाद वक्र • पैमाने की बचतें - आन्तरिक बचतें - बाहरी बचतें • पैमाने की हानियाँ	
6.	उत्पादक की अनुकूलतम स्थिति – सम-उत्पाद वक्र विश्लेषण • अर्थ, परिभाषा • मान्यतायें • सम-उत्पाद तालिका व मानचित्र • विशेषतायें • रिज रेखाएँ • आर्थिक क्षेत्र • विस्तार पथ	51 - 54
7.	लागत का सिद्धान्त • लागत की धारणाएँ • लागत फलन • लागत सिद्धान्त - परंपरावादी सिद्धांत • अल्पकालीन लागत • दीर्घकालीन लागतें - लागत वक्रों का आधुनिक सिद्धान्त • लागत वक्रों का महत्व	55 - 66
	Unit – III	
8.	उपयोगिता विश्लेषण • गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण • विशेषतायें • उपयोगिता की धारणायें • उपयोगिता विश्लेषण के नियम • अपवाद, महत्व, आलोचनाएँ • नियम लागू होने के कारण • सम-सीमान्त उपयोगिता • उपभोक्ता संतुलन मान्यताएँ, निर्धारण, आलोचनाएँ	67 - 77
9.	तटस्थता वक्र विश्लेषण • तटस्थता अनुसूची • उपभोक्ता के संतुलन पर वस्तु की कीमत में होने वाला परिवर्तन का प्रभाव महत्व, आलोचनाएँ	78 - 83
	Unit – IV	
10.	बाजार संरचना • प्रकार. विशेषताएँ वर्गीकरण	84 - 89

Unit - I

Basic Problems of an Economy

Ch-1

अर्थव्यवस्था की आधारभूत समस्याएँ

अर्थव्यवस्था क्या है - अर्थव्यवस्था से अभिप्राय किसी क्षेत्र के लोगों की आजीविका कमाने के लिये की गई आर्थिक क्रियाओं के कुल जोड़ से है।
ए० जे० ब्राउन के अनुसार, " अर्थव्यवस्था वह प्रणाली है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी आजीविका कमाते हैं तथा अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि करते हैं।

आर्थिक समस्या क्या है

आर्थिक समस्या वह समस्या है जिसका संबंध वर्तमान साधनों के उचित बंटवारे तथा भविष्य में साधनों की वृद्धि और उनके वितरण से है।
राबर्ट पॉल के अनुसार, " आर्थिक समस्या वह समस्या है जिसका संबंध चुनाव की उस आवश्यकता से है कि क्या, कैसे और किसके लिये उत्पादन करना है तथा आर्थिक प्रगति कैसे प्राप्त करनी है।"

लेफ्टविच के अनुसार, " आर्थिक समस्या का संबंध मनुष्य की वैकल्पिक आवश्यकताओं के लिये सीमित साधनों के वितरण तथा इन साधनों का अधिक से अधिक आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये प्रयोग करने से है।

आर्थिक समस्या के कारण

- असीमित आवश्यकताएँ - कोई भी मनुष्य अपनी सभी आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से संतुष्ट

नहीं कर सकता।

(2) सीमित या दुर्लभ साधन –
मकोनल के शब्दों में, "दुर्लभता वह स्थिति है जिसमें सभी मानवीय आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिये पर्याप्त साधन नहीं है।"

(3) साधनों के वैकल्पिक प्रयोग – साधनों का सीमित होना तथा इनका वैकल्पिक प्रयोग होना आर्थिक समस्याओं के उत्पन्न होने का मुख्य कारण है।

एक आर्थिक प्रणाली की आधारभूत समस्याएँ

प्रत्येक आर्थिक प्रणाली की कुछ आधारभूत आर्थिक समस्याएँ होती हैं। इन समस्याओं को एक अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ भी कहा जाता है। निम्न आधारभूत समस्यायें –

- किन वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन किया जाए तथा कितनी मात्रा में किया जाए?
- उत्पादन किस प्रकार किया जाए?
- उत्पादन किसके लिये किया जाए?
- साधनों का पूर्ण प्रयोग या पूर्ण रोजगार कैसे हो?
- उत्पादन तथा वितरण में कुशलता कैसे प्राप्त हो?
- आर्थिक विकास में वृद्धि कैसे हो?

उत्पादन संभावना वक्र
Production Possibility Curve.

आधुनिक अर्थशास्त्री आधारभूत समस्याओं की व्याख्या करने के लिये उत्पादन संभावना तालिका तथा उत्पादन संभावना वक्र की सहायता लेते हैं –

उत्पादन संभावना तालिका

उत्पादन संभावना तालिका वह तालिका है जो कि दी हुई तकनीकों तथा साधनों में दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगों के उत्पादन की वैकल्पिक संभावनाओं को प्रकट करती है।

उत्पादन संभावना वक्र

उत्पादन संभावना वक्र उत्पादन संभावना तालिका का ग्राफिक प्रतीक है जो दिये हुये साधनों में दो तथा तकनीकों में दो वस्तुओं के उत्पादनों की वैकल्पिक संभावनाओं को प्रकट करते है।

परिभाषा लिप्सी के अनुसार – " उत्पादन सम्भावना वक्र वह वक्र है जो वस्तुओं के संभव संयोगों को प्रकट करती है जिनका दिये हुये उपलब्ध साधनों तथा तकनीक की स्थिति में एक अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादन किया जा सकता है।"

मान्यताएं – उत्पादन संभावना वक्र की धारणा निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है -

- उत्पादन के साधनों की स्थिर मात्रा
- उपलब्ध साधनों का पूर्ण उपयोग
- स्थिर तकनीक
- दो वस्तुएं

स्वरूप या विशेषताएं

उत्पादन संभावना वक्र का ढलान नीचे की ओर होता है – इसका कारण यह है कि पूर्ण रोजगार की स्थिति में दोनों वस्तुओं के उत्पादन को (स

कि साथ नहीं बढ़ाया जा सकता है।

• उत्पादन संभावना वक्र मूल बिंदु के नतोदर है- इसका कारण यह है कि x वस्तु की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिये y वस्तु की पहले की तुलना में अधिक इकाइयों का त्याग करना पड़ेगा।

उदाहरण - मान लीजिए अर्थव्यवस्था यह निर्णय लेती है कि वह अपने उपलब्ध साधनों के द्वारा केवल दो वस्तुओं गेहूँ तथा कपड़े का उत्पादन करेगी। यदि उत्पादन के सारे साधन केवल गेहूँ के उत्पादन के लिये प्रयोग किये जायें तो 100 लाख टन गेहूँ का उत्पादन किया जा सकता है। इसके विपरीत यदि उत्पादन के सारे साधन केवल कपड़े के उत्पादन के लिये प्रयोग किये जायें तो 4000 गाँठें कपड़े का उत्पादन किया जा सकता है। तालिका द्वारा गेहूँ तथा कपड़े के उत्पादन की विभिन्न संभावनाओं को प्रकट किया गया है इसलिए इस तालिका को उत्पादन संभावना तालिका कहते हैं।

वस्तुएँ / संयोग	उत्पादन सम्भावनाएँ				
संयोग	A	B	C	D	E
गेहूँ	100	90	70	40	0
कपड़ा	0	1	2	3	4

उत्पादन संभावना तालिका

उपरोक्त तालिका में यदि 'A' संयोग का उत्पादन किया जाएगा तो केवल 100 लाख टन गेहूँ का उत्पादन होगा परंतु कपड़े का कोई उत्पादन नहीं होगा। इसके विपरीत यदि E संयोग का उत्पादन किया जायेगा तो केवल 4 हजार गाँठें कपड़े का उत्पादन होगा परन्तु गेहूँ का कोई उत्पादन नहीं होगा।

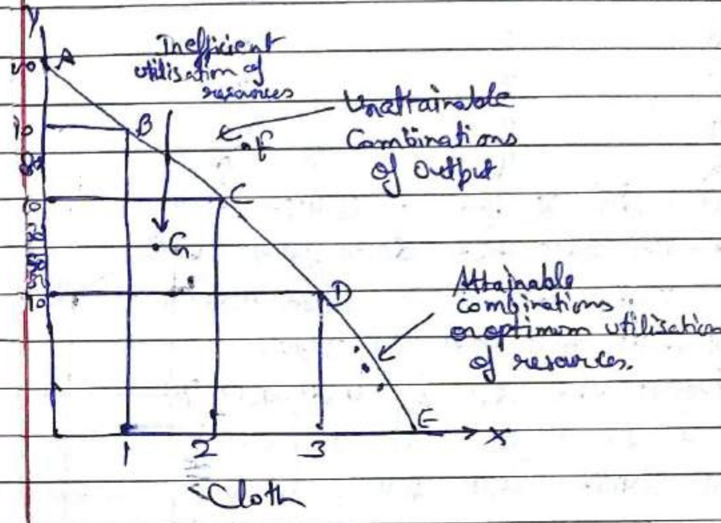

उत्पादन सम्भावना वक्र मूल बिंदु के नतोदर क्यों होती है? 4

उत्पादन सम्भावना वक्र मूल बिंदु की ओर नतोदर होती है। कपड़े की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन के लिये गेहूँ की अधिक से अधिक इकाइयों का त्याग करना पड़ेगा। गेहूँ के रूप में कपड़े के प्रतिस्थापन की दर बढ़ रही है। इसलिए एक उत्पादन सम्भावना वक्र सामान्यतः मूल बिंदु की ओर नतोदर होती है।

संयोग

P.T.O

उत्पादन सम्भावना तालिका

संयोग Combinations	कपड़ा (हजार गांठें) Cloth	गेहूँ (लाख टन) Wheat	प्रतिस्थापन की दर Rate of Substitution
A	0	100	
B	1	90	1:10
C	2	70	1:20
D	3	40	1:30
E	4	0	1:40

जैसे-जैसे X वस्तु के उत्पादन को एक-एक इकाई करके बढ़ाया जाता है तो Y वस्तु को क्रमशः अधिक मात्रा का त्याग करना पड़ता है। उत्पादन संभावना वक्र AE से पता चलता है कि जब X वस्तु की पहली इकाई का उत्पादन किया जाता है तो Y वस्तु या गेहूँ की AB इकाई का त्याग करना पड़ता है जब X वस्तु की एक और इकाई का उत्पादन किया जाएगा तो Y वस्तु की CD इकाई का त्याग करना पड़ेगा। इसका अभिप्राय यह है कि वस्तु X (कपड़े) की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिये Y वस्तु की पहले से अधिक त्याग करना पड़ेगा।

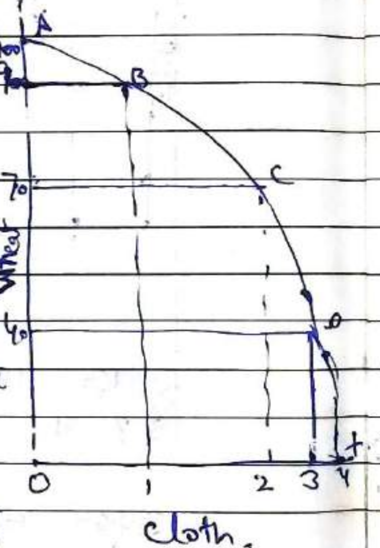

उत्पादन संभावना वक्र के नतोदर होने से अभिप्राय है उत्पादन बढ़ती हुई अवसर लागत के नियम के अनुसार होता है

बढ़ती अवसर लागत का नियम क्यों लागू होता है?

वस्तु X की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिये वस्तु Y की अधिक इकाइयों का त्याग करना पड़ेगा। अतएव वस्तु X का उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ उसकी प्रत्येक अतिरिक्त इकाई की अवसर लागत बढ़ती जाएगी, इस प्रकार उत्पादन पर बढ़ती अवसर लागत का नियम लागू होगा।

उत्पादन सम्भावना वक्र तथा आधारभूत समस्याओं का समाधान

उत्पादन सम्भावना वक्र का प्रयोग दुर्लभता, कार्यकुशलता तथा अवसर लागत की धारणा की व्याख्या करने के लिये उपयोग किया जा सकता है।

किसी अर्थव्यवस्था की आधारभूत समस्याओं का वर्णन उत्पादन सम्भावना वक्र की धारणा की सहायता से निम्न प्रकार से किया जा सकता है -

क्या उत्पादन करना है तथा कितनी मात्रा में करना है?

साधनों की दुर्लभता के कारण हमें उन विभिन्न वस्तुओं तथा सेवाओं में से चुनाव करना पड़ता है जिनका उत्पादन संभव है।

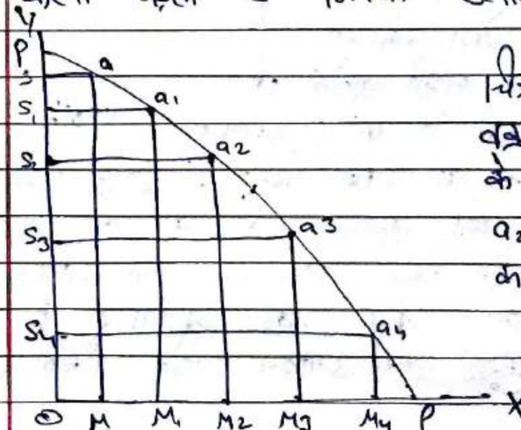

चित्र में PP उत्पादन सम्भावना वक्र है। यह गेहूँ तथा मशीनों के वैकल्पिक संयोगों a, a1, a2, a3, a4 ..... को प्रदर्शित कर रही है।

उत्पादन की बिभिन्न संभावनाएं निम्न दो तथ्य बतलाती है।

(i) मशीनों का अधिक उत्पादन तभी सम्भव है जब गेहूँ का उत्पादन कम हो। अत: ऐसी स्थिति में गेहूँ के उत्पादन से साधनों को हटाकर मशीनों के अधिक उत्पादन में लगाना होगा।

(ii) प्रत्येक समय जब भी हम अधिक मशीनों के उत्पादन की योजना बनाएंगे, तब हमें गेहूँ के उत्पादन का बढ़ती दर पर ($S_3 S_4 > S_2 S_3 > S_1 S_2 > S S_1$) त्याग करना होगा।

(2) <u>कैसे उत्पादन करना है?</u> किसी दी हुई उत्पादन की कुशल तकनीक वह तकनीक होगी जो साधनों के संयोगों का प्रयोग इस प्रकार करती है जिसमें उत्पादन अधिकतम होता है या लागत न्यूनतम होती है।

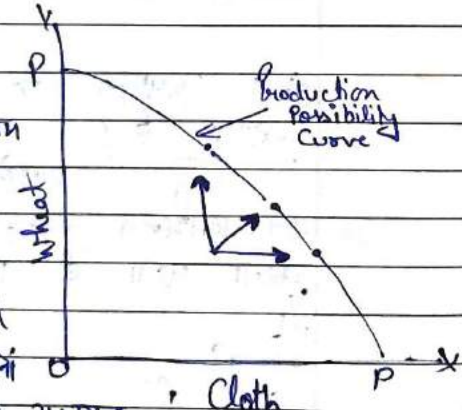

अर्थव्यवस्था एक ऐसी तकनीक का प्रयोग करेगी जो उत्पादन के सभी साधनों का प्रयोग करती है परंतु अकुशल है तो उत्पादन की मात्रा बिंदु E द्वारा प्रकट की जायेगी। यदि उत्पादन की कुशल तकनीक का प्रयोग किया जाएगा तो या तो किसी एक वस्तु का अधिक उत्पादन सम्भव हो सकेगा जैसा बिंदु A या C से ज्ञात होता है या दोनों वस्तुओं का उत्पादन अधिक किया जा सकेगा जैसा बिंदु B से पता चलता है।

<u>पूर्ण रोजगार कैसे प्राप्त हो</u> - चित्र में PP वक्र किसी अर्थव्यवस्था की उस उत्पादन सम्भावना को प्रकट करती है जब साधनों में कुछ सीमा तक बेरोजगारी पाई जाती है दूसरी ओर P.P. वक्र उस उत्पादन सम्भावना को प्रकट करती है जब साधनों में पूर्ण रोजगार पाया जाता है।

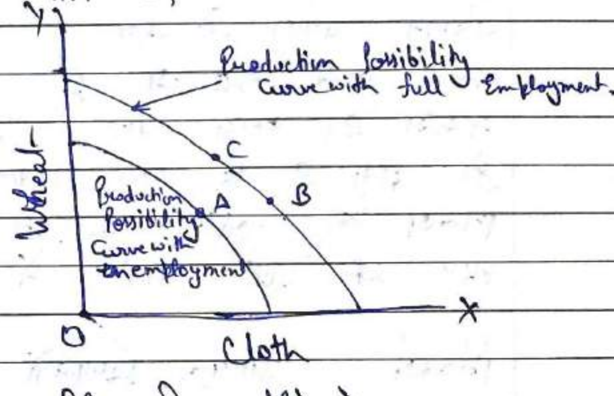

आर्थिक विकास कैसे हो

आर्थिक विकास वह स्थिति है जिसमें उत्पादन की मात्रा में वृद्धि होती है। उत्पादन सम्भावना वक्र की सहायता से आर्थिक विकास की स्थिति को स्पष्ट किया जा सकता है कि अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की उत्पादन सम्भावना वक्र PP चित्र (A) द्वारा प्रकट की गई है। अर्थव्यवस्था संयोग 'A' तथा संयोग 'B' तो प्राप्त कर सकती है परन्तु बिंदु 'C' द्वारा प्रकट संयोग साधनों की दुर्लभता तथा तकनीकी ज्ञान के अभाव के कारण अप्राप्य है।

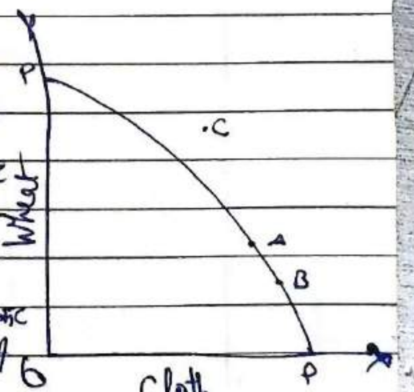

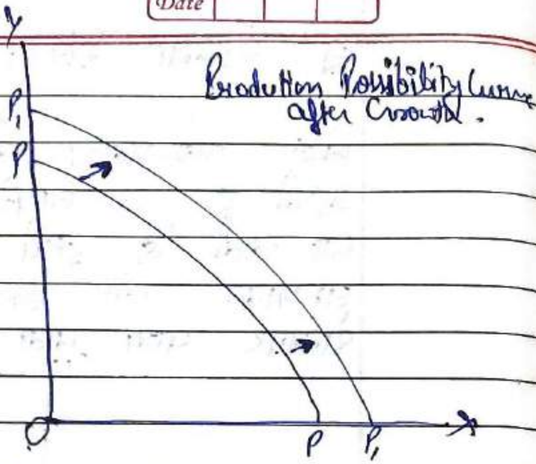

पूँजी स्टॉक में वृद्धि उत्पादन सम्भावना वक्र को ऊपर की ओर की ओर सरका देती है, परंतु इसके लिये निवेश की आवश्यकता होती है जो वर्तमान उपभोग को कम करके प्राप्त किया जा सकता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि एक अवधि में किये जाने वाले निवेश के कारण उत्पादन सम्भावना वक्र PP ऊपर सरक कर दूसरी अवधि में P_1P_1 हो जाती है।

निष्कर्ष — आर्थिक प्रणालियों की आधारभूत समस्याएं परस्पर निर्भर हैं। ये समस्याएं प्रत्येक अर्थव्यवस्था की दो आधारभूत विशेषताओं सीमित साधन तथा असीमित आवश्यकताओं पर निर्भर करती है।

Ch-2

कीमत संयंत्र का कार्यकरण

कीमत संयंत्र से अभिप्राय यह है कि सभी वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतें बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के माँग तथा पूर्ति द्वारा निर्धारित होती है।

परिभाषा

फर्गुसन के शब्दों में, "कीमत संयंत्र से अभिप्राय विभिन्न बाजारों में माँग और पूर्ति की अंतर्क्रिया द्वारा वस्तुओं, सेवाओं तथा साधनों की कीमत निर्धारण करना है, कीमत वह राशि है जो किसी वस्तु या साधन की निश्चित मात्रा तथा गुणवत्ता को प्राप्त करने के लिये दी जाती है।"

कीमत संयंत्र का कार्यकरण।

विक्रेता के लिये कीमत एक पुरस्कार है तथा क्रेता के लिये कीमत उसके द्वारा किया जाने वाला भुगतान है। पुरस्कार तथा भुगतान की इस प्रणाली को ही कीमत संयंत्र कहा जाता है।

एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के वृहद् बाजार में कीमत संयंत्र को चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। OY पर कीमत स्तर OX पर पर वस्तु की माँग तथा पूर्ति की मात्रा को प्रकट किया जाता है। जब वस्तु की कीमत OP है तथा क्रेता वस्तु की OL मात्रा खरीदने को तैयार है तथा विक्रेता OR मात्रा बेचने को तैयार है।

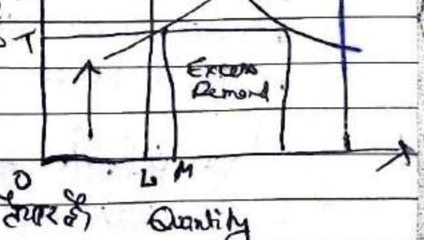

अतएव OP कीमत पर वस्तु की पूर्ति OK और उसकी माँग OL से अधिक होगी। OK > OL अर्थात LK पूर्ति आधिक्य होगा। इसके विपरीत जब कीमत OT होगी, वस्तु की माँग ON होगी तथा पूर्ति OM होगी। इस प्रकार वस्तु की माँग उसकी पूर्ति से अधिक होगी ON > OM अर्थात MN माँग आधिक्य होगी। यदि कीमत OR निर्धारित होती है तो माँग तथा पूर्ति एक-दूसरे के बराबर होगी।

कीमत संयंत्र की क्रिया विधि चित्र द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है

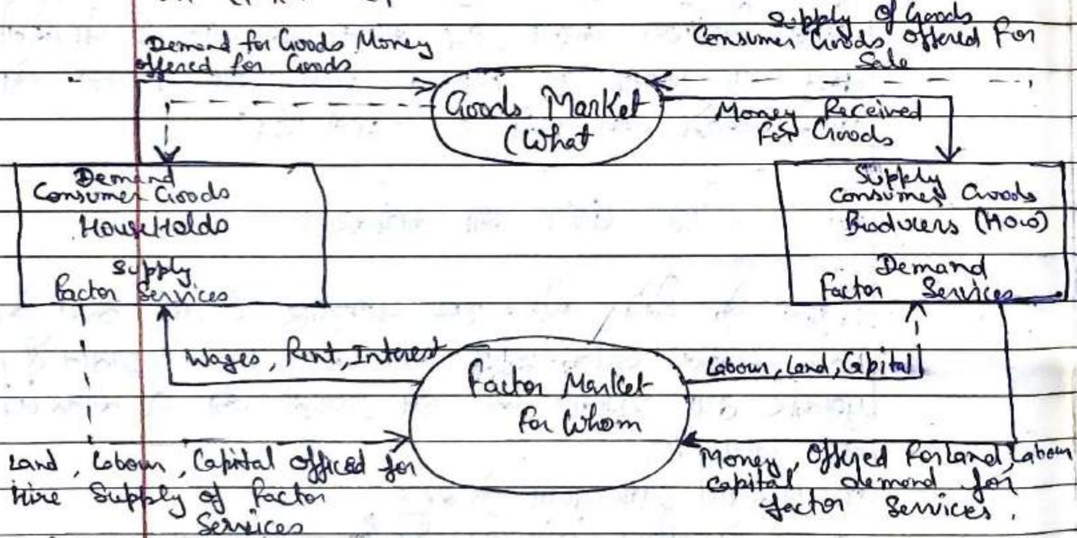

- गृहस्थ तथा उत्पादक, वस्तु बाजार और साधन
- गृहस्थ
- उपभोक्ता
- साधन बाजार में माँग तथा पूर्ति
- आय के वितरण की समस्या

एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में कीमत संयंत्र वस्तु बाजार एवं साधन बाजार में संतुलन स्थापित करता है।

कीमत संयंत्र द्वारा आधारभूत आर्थिक समस्याओं का समाधान या
कीमत संयंत्र की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं में क्या भूमिका है?

विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं में केंद्रीय समाधान विभिन्न प्रकार से होता है। आधुनिक समय में अर्थव्यवस्थाओं का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था
- समाजवादी अर्थव्यवस्था
- मिश्रित अर्थव्यवस्था

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में केंद्रीय समस्याओं का समाधान

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था है जिसमें उत्पादन के साधनों तथा सम्पत्ति पर निजी स्वामित्व होता है आर्थिक क्रियाएँ स्वहित के लिए की जाती हैं। उद्यमी लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से उत्पादन करते हैं। इन्हें स्वचालित उद्यम अर्थव्यवस्था या मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था भी कहा जाता है।

इनको निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट किया जा सकता है —
- क्या उत्पादन करना है तथा कितनी मात्रा में करना है?

एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्या है कि क्या उत्पादन करना है, का समाधान कीमत संयंत्र की सहायता से किया जाता है। वास्तव में विक्रेता उन वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करते हैं जिनकी क्रेताओं द्वारा माँग

की जाती है। यदि कीमतें अधिक होंगी, तो वे उस वस्तु की अधिक मात्रा का उत्पादन करेंगे। कीमतें कम होने पर वे वस्तु की कम मात्रा का उत्पादन करेंगे।

(2) <u>उत्पादन कैसे करना है?</u>

इसकी दूसरी समस्या है कि "उत्पादन कैसे करना है" अर्थात् उत्पादन की तकनीक का समाधान भी कीमत संयंत्र द्वारा किया जाता है। किसी अर्थव्यवस्था में यदि श्रम अर्थात् मजदूरी की कम दर पर अधिक श्रमिक उपलब्ध है तो श्रमिकों का अधिक प्रयोग होगा। अर्थात् उत्पादन श्रम प्रधान होगा। इसके विपरीत श्रम महँगा है तो उत्पादन पूँजी प्रधान तकनीक द्वारा होगा।

इसे उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। मान लीजिए किसी श्रम की प्रति इकाई लागत ₹5 है तथा पूँजी की प्रति इकाई लागत ₹10 है। 15 मीटर कपड़े का उत्पादन की श्रम प्रधान तथा पूँजी प्रधान तकनीक द्वारा उत्पादन लागत को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

तकनीक	श्रम लागत	पूँजी लागत	कुल लागत
श्रम प्रधान	5x5 = ₹25	2x10 = ₹20	₹45
पूँजी प्रधान	2x5 = ₹10	5x10 = ₹50	₹60

इसके विपरीत यदि श्रम की प्रति इकाई लागत बढ़कर ₹15 हो जाती है तथा पूँजी की प्रति इकाई लागत पहले के बराबर ही ₹10 रहती है तो 15 मीटर कपड़े की उत्पादन लागत को तालिका द्वारा

स्पष्ट किया जा सकता है।

तकनीक	श्रम लागत	पूँजी लागत	कुल लागत
श्रम प्रधान	5x15 = ₹75	2x10 = ₹20	₹95
पूँजी प्रधान	2x15 = ₹30	5x10 = ₹50	₹80

कीमत संयंत्र से यह तय होता है कि जो वस्तुएँ उत्पादित की जानी हैं उनका उत्पादन कौन से उत्पादकों को करना है।

(3) उत्पादन किसके लिये किया जाना है?

अर्थव्यवस्था की तीसरी केंद्रीय समस्या अर्थात् "उत्पादन कौन से लोगों के लिये किया जाना है" का संबंध वास्तव में कुल उत्पाद के वितरण से है।

कीमत संयंत्र द्वारा किसी वस्तु का गृहस्थों में वितरण उनकी कीमत देने की योग्यता तथा इच्छा के आधार पर किया जाता है। जो उपभोक्ता अधिक कीमत देने की योग्य है व इच्छुक है उनके लिये उत्पादन होगा।

P.T.O

पूर्ण रोजगार :
पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार का निर्धारण भी कीमत संयंत्र द्वारा किया जाता है। पूर्ण रोजगार की मात्रा, उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करती है। उत्पादन की मात्रा निवेश की मात्रा पर निर्भर करती है। निवेश की बचत पर निर्भर करती है। बचत तथा निवेश ब्याज की दर द्वारा निर्धारित होते हैं।

आर्थिक विकास- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास के उद्देश्य को प्राप्त करने का कार्य भी कीमत संयंत्र द्वारा ही किया जाता है। आर्थिक विकास के लिये उत्पादन की नई तकनीक की आवश्यकता होती है।
शुम्पीटर के अनुसार, " इन अर्थव्यवस्थाओं में पूँजी को एकत्रित करने तथा नई तकनीकों को लागू करने का कार्य स्वतंत्र उद्यमियों द्वारा किया जाता है।

समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं में केन्द्रीय समस्याओं का समाधान

समाजवादी अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था है जिसमें उत्पादन के साधनों पर सरकार का नियंत्रण होता है।
समाजवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक समस्याओं का समाधान कीमत संयंत्र द्वारा नहीं होता इनका समाधान सरकार या केंद्रीय नियोजन अधिकारी के आदेशों द्वारा किया जाता है। इसको निम्न विवरण द्वारा स्पष्ट हो जाता है।

क्या उत्पादन करना है तथा कितनी मात्रा में करना है -
एक समाजवादी अर्थव्यवस्था में केंद्रीय नियोजन अधिकारी ही

यह निर्णय लेता है कि कौन-सी वस्तुओं का उत्पादन किया जाए तथा कितना किया जाए? इस उद्देश्य के लिये वह देश में उपलब्ध साधनों से संबंधित आँकड़े एकत्रित करता है। केंद्रीय नियोजन अधिकारी द्वारा यह तय किया जाता है कि कुल उत्पादन में पूँजीगत वस्तुओं का कितना भाग होना चाहिए तथा उपभोक्ता वस्तुओं का कितना भाग होना चाहिए।

• उत्पादन कैसे करना है? - एक समाजवादी अर्थव्यवस्था में केंद्रीय नियोजन अधिकारी द्वारा ही यह निर्धारित किया जाता है कि वस्तुओं का उत्पादन कैसे किया जाए। इसके लिये तीन तरीके अपनाये जाते हैं - (i) भूल तथा जाँच का तरीका, (ii) आगत - उत्पाद विधि (iii) छाया कीमत संयंत्र विधि कीमत प्रेरित निर्णायक विधि

(3) उत्पादन किसके लिये किया जाना है? - सरकार का सभी साधनों पर अधिकार होता है जनता तो केवल श्रमिकों के रूप में कार्य करती है। इसलिए लोगों को केवल मजदूरी के रूप में ही आय प्राप्त होती है केंद्रीय नियोजन अधिकारी आय का निर्धारण कार्य सिद्धान्त के आधार पर करता है।
इन अर्थव्यवस्थाओं में 'प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार तथा प्रत्येक को उसके कार्य के अनुसार' का सिद्धान्त आय के वितरण का आधार है।

(4) साधनों का पूर्ण उपयोग - केन्द्रीय नियोजन अधिकारी इस प्रकार से योजना बनाता है कि सभी

साधनों का इष्टतम प्रयोग किया जाए।

आर्थिक विकास - सरकार द्वारा आर्थिक विकास की उस योजना को लागू किया जाता है। सरकार इस बात का पूरा प्रयत्न करती है कि आर्थिक विकास की निर्धारित दरों को प्राप्त करने के लिये उपयुक्त साधन जुटाये जा सकें तथा उनका उचित प्रयोग किया जा सके।

मिश्रित अर्थव्यवस्था या भारतीय अर्थव्यवस्था में केंद्रीय समस्याओं का समाधान

एक मिश्रित अर्थव्यवस्था जैसे भारतीय अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था है जिसमें निजी क्षेत्र तथा सार्वजनिक क्षेत्र दोनों पाये जाते हैं। अतएव मिश्रित अर्थव्यवस्था पूँजीवाद तथा समाजवाद दोनों का ही मिश्रण है।

क्या उत्पादन करना है ?- मिश्रित अर्थव्यवस्था के निजी क्षेत्र में उन वस्तुओं का उत्पादन किया जाएगा जिन्हें उपभोक्ता खरीदना पसंद करेंगे। इसके विपरीत सार्वजनिक क्षेत्र में योजनाधिकारी द्वारा यह तय किया जाता है। उदाहरण के लिये सरकार जिस वस्तु के उत्पादन को प्रोत्साहित करना चाहती है उस पर कर की दर कम कर देती है तथा कम ब्याज की दर पर उपयुक्त साख सुविधा का प्रबन्ध करती है।

कैसे उत्पादन करना है ? एक मिश्रित अर्थव्यवस्था के निजी क्षेत्र में यह निर्णय भी कि कौन-सी वस्तुओं का उत्पादन किया जाएगा।

कीमत संयंत्र द्वारा निर्धारित किया जाता है। कीमतों को भागों में बांटा जाता है। (i) वस्तुओं की कीमतें (ii) साधनों की कीमतें।

मिश्रित अर्थव्यवस्था के सार्वजनिक क्षेत्र में योजना अधिकारी तथा सरकार द्वारा यह तय किया जाता है कि वस्तुओं का उत्पादन कैसे किया जाए। सरकार इस संबंध में रोजगार अवसरों में वृद्धि, आर्थिक विकास आदि के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हैं।

- वस्तुओं का उत्पादन किसके लिये करना है?

सरकार का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि देश की निर्धन जनता को उसकी आवश्यकतानुसार वस्तुएँ प्राप्त हो सकें। विलासिता की वस्तुओं के स्थान पर आवश्यकताओं की वस्तुओं का अधिक उत्पादन हो।

साधनों का पूर्ण प्रयोग - इस अर्थव्यवस्था में सरकार सार्वजनिक क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाने का प्रयत्न करती है जिससे पूर्ण तरीके से साधनों का प्रयोग हो सके।

आर्थिक विकास - सरकार भी नई तकनीकों के प्रयोग तथा आर्थिक विकास के लिये आवश्यक अन्य तत्वों को विकसित करके आर्थिक विकास के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील रहती है।

कीमत संयंत्र की सीमाएँ या दोष

दोष - (i) प्रतियोगिता की समाप्ति, अपव्ययपूर्ण तथा अकुशल उत्पादन, सामाजिक वस्तुओं की उपेक्षा,

Page No. 20

साधनों की गतिशीलता , आय का असमान वितरण, बेरोजगारी

संसार की अधिकतर मुक्त अर्थव्यवस्थाओं मे शुद्ध पूँजीवाद नहीं पाया जाता बल्कि नियमित पूँजीवाद पाया जाता है।

माँग की लोच

Page No. 21

Ch-3. Elasticity of Demand.

माँग तथा माँग के नियम से अभिप्राय माँग किसी पदार्थ की वह मात्रा है जिसे एक उपभोक्ता समय की एक निश्चित अवधि में एक निश्चित कीमत पर खरीदने के लिये केवल इच्छुक या योग्य ही नहीं बल्कि तैयार भी है।

माँग का नियम

माँग का नियम तो कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप माँग में होने वाले परिवर्तन की दिशा को प्रकट करता है।

माँग की लोच का अर्थ -

डॉ॰ मार्शल - 'अर्थशास्त्र के सिद्धान्त' मे किया था। माँग की लोच एक तकनीकी धारणा है। लोच एक तत्व में होने वाले परिवर्तन के कारण दूसरे तत्व में होने वाले परिवर्तन के अनुपात का माप है।

माँग की लोच माँग के किसी निर्धारक में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन तथा इसके फलस्वरूप माँग की मात्रा में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन का अनुपात है।

परिभाषा -

बोल्डिंग के अनुसार - " माँग की लोच कीमत लोच कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप माँग में होने वाले परिवर्तन की प्रतिक्रिया को मापती है

माँग की लोच की श्रेणियाँ

इसको पाँच श्रेणियों में बाँटा गया है -

(i) पूर्णतया लोचदार

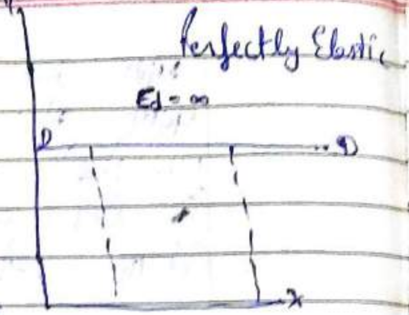

पूर्णतया लोचदार माँग से अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें प्रचलित कीमत पर माँग अनन्त होती है इस स्थिति में कीमत के थोड़ा सा बढ़ने पर माँग शून्य हो जाएगी।

(ii) पूर्णतया बेलोचदार माँग

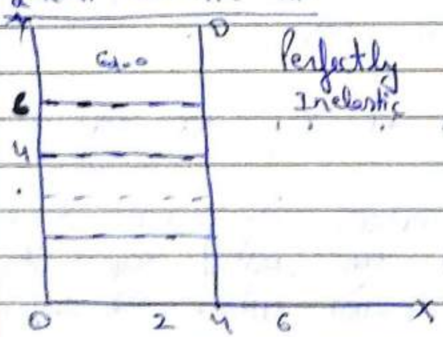

वह स्थिति है जिसमें कीमत में काफी परिवर्तन भी माँग को प्रभावित नहीं करता।

(iii) इकाई लोचदार माँग –

यह वह स्थिति जिसमें कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन माँग में भी उतना ही प्रतिशत परिवर्तन या समान परिवर्तन

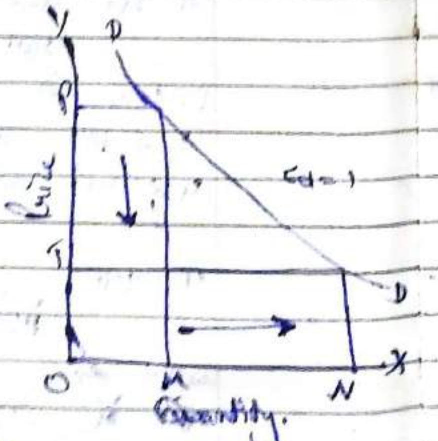

(iv) इकाई से अधिक लोचदार माँग –

इकाई से अधिक लोचदार माँग वह है "जिसमें कीमत में जितने प्रतिशत परिवर्तन

होता है माँग की मात्रा में उससे अधिक प्रतिशत परिवर्तन होता है।

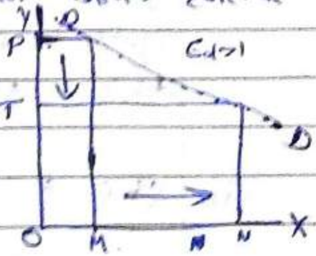

इकाई से कम लोचदार माँग –

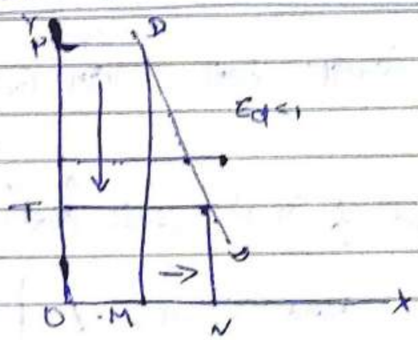

जब उसकी कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन की तुलना में माँगी गई मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन कम होता है।

माँग की कीमत लोच का माप

माँग की लोच से पता चलता है कि किसी वस्तु की माँग (i) इकाई या इकाई से अधिक या (iii) इकाई से कम लोचदार है। इसको मापने की कई विधियाँ हैं

(i) कुल व्यय विधि
(ii) आनुपातिक प्रतिशत विधि
(iii) बिंदु विधि
(iv) चाप विधि
(iv) आय विधि

कुल व्यय विधि – माँग की कीमत लोच को मापने की कुल व्यय विधि का

प्रतिपादन डॉ० मार्शल ने किया। कुल व्यय का अनुमान - कीमत को वस्तु की मात्रा से गुणा (P×Q) करके लगाया जा सकता है।

(i) इकाई से अधिक लोचदार माँग यानि Ed>1 होगी।

(ii) इकाई लोचदार माँग यानि Ed = 1 होगी

(iii) इकाई से कम लोचदार माँग यानि Ed<1

कुल व्यय में किस प्रकार परिवर्तन होता है

माँग की कीमत लोच	कीमत में वृद्धि	कीमत में कमी
बेलोचदार Ed<1	कुल व्यय बढ़ता है	कुल व्यय कम होता है।
इकाई लोच Ed=1	कुल व्यय में कोई परिवर्तन नहीं होता	कुल व्यय में कोई परिवर्तन नहीं होता।
लोचदार Ed>1	कुल व्यय कम होता है।	कुल व्यय बढ़ता है।

तालिका से स्पष्ट है —

- इकाई लोचदार माँग — कीमत में होने वाले परिवर्तन का कुल व्यय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता
- इकाई से अधिक लोचदार — कीमत में परिवर्तन होने के फलस्वरूप कुल व्यय में परिवर्तन विपरीत दिशा में होता है।
- इकाई से कम लोचदार — कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप कुल व्यय में परिवर्तन समान दिशा में होता है।

माँग की लोच को मापने की कुल व्यय विधि को स्पष्ट किया जा सकता है चित्र में OX अक्ष पर कुल व्यय और OY अक्ष पर कुल कीमत को प्रकट किया गया है ST रेखा कुल व्यय रेखा है। ST रेखा के बीच का BC भाग इकाई लोच को प्रकट कर रहा है।

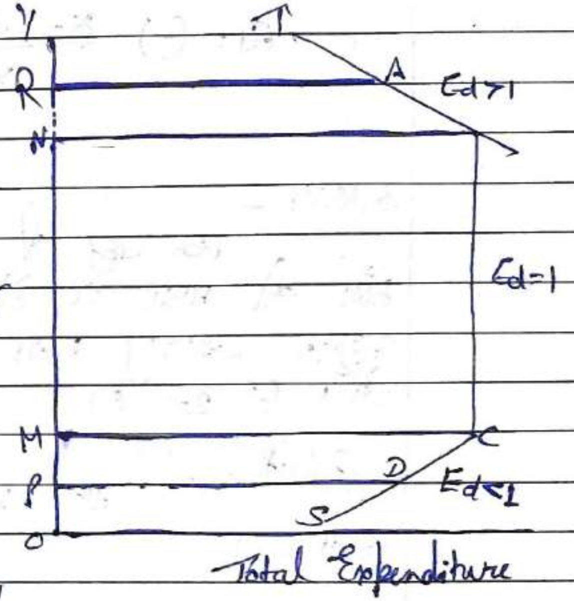

अर्थात जब कीमत OM है तो कुल व्यय MC है। जब कीमत बढ़ कर ON हो जाती है तो कुल व्यय NB अर्थात पहले जितना ही रहता है ST रेखा TB भाग इकाई से अधिक लोचदार माँग को प्रकट कर रहा है इससे पता चलता है कि जब कीमत ON से बढ़ कर OR हो जाती है तो कुल व्यय NB से कम हो कर RA हो जाता है अर्थात इसमें विपरीत दिशा में परिवर्तन होता है।

प्रतिशत या आनुपातिक विधि

इस विधि के अनुसार माँग की कीमत लोच का अनुमान लगाने के लिए माँग में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन को कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन से भाग कर दिया जाता है।

$$Ed = (-)\frac{X\text{- वस्तु की माँगी गई मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{X\text{- वस्तु की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

उदाहरण - एक वस्तु की कीमत में 10% कमी के कारण माँग की मात्रा में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन का अनुमान लगाइए। माना वस्तु की माँग की कीमत लोच (-) 2.5 है।

Solution - माना माँग में प्रतिशत परिवर्तन x होता है।

$$\text{माँग की लोच} = (-)\frac{\text{माँगी गई मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$2.5 = (-)\frac{x}{(-10\%)}$$

$$x = 2.5 \times 10\% = 25\%$$

Ans. माँगी गई मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन 25% होगा।

चाप कीमत लोच

एक माँग वक्र पर दो बिंदुओं के बीच के भाग को चाप कहा जाता है।

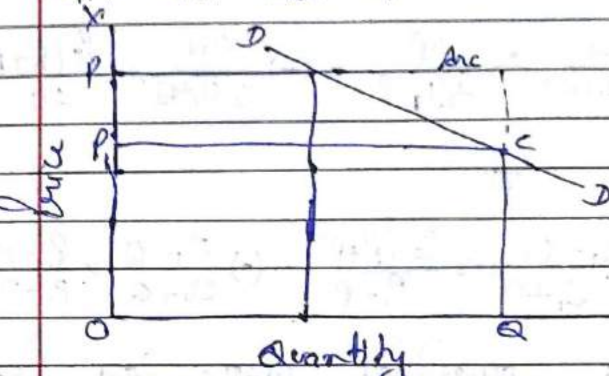

चित्र में DD माँग वक्र पर A और C बिंदुओं के बीच का भाग चाप है। जब मध्य बिंदु या औसत कीमत तथा मात्रा के प्रयोग करने से जो लोच प्राप्त होती है उसे चाप कीमत लोच कहा जाता है।

परिभाषा (Definition)

वाटसन के अनुसार - "चाप कीमत लोच माँग वक्र के चाप के मध्य बिंदु की कीमत लोच है।"

फर्गुसन के अनुसार - "चाप कीमत लोच एक माँग वक्र पर दो बिन्दुओं के बीच औसत लोच का एक माप है।"

Formula -

$$Ed = \frac{P}{Q} \times \frac{\Delta Q}{\Delta P}$$

यहाँ - $\Delta Q = Q_1 - Q$

$\Delta P = P_1 - P$

अतः माँग की चाप लोच को निम्नलिखित सूत्र की सहायता से मापा जाता है —

$$Ed = \frac{\text{मात्रा में परिवर्तन}}{\frac{1}{2}\text{ मात्राओं का योग}} \div \frac{\text{कीमत में परिवर्तन}}{\frac{1}{2}\text{ कीमतों का योग}}$$

$$Ed = (-)\frac{\Delta Q}{\frac{1}{2}(Q_1+Q)} \div \frac{\Delta P}{\frac{1}{2}(P_1+P)} = (-)\frac{\Delta Q}{\frac{1}{2}Q_1+Q} \times \frac{\frac{1}{2}(P_1+P)}{\Delta P}$$

या

$$Ed = (-)\frac{Q_1-Q}{\frac{1}{2}Q_1+Q} \times \frac{\frac{1}{2}(P_1+P)}{P_1-P} = (-)\frac{Q_1-Q}{Q_1+Q} \times \frac{P_1+P}{P_1-P}$$

अतः चापलोचविधि, प्रतिशत लोच विधि की तुलना में अधिक वास्तविक तथा निर्भर विधि है।

आगम की धारणाएँ

Concepts of Revenue

आगम की तीन धारणाएँ है :

(1) कुल आगम (2) औसत आगम (3) सीमान्त आगम

औसत आगम (Average Revenue)

मैकोनेल के अनुसार - "किसी वस्तु की बिक्री से प्राप्त होने वाली प्रति इकाई आय, औसत आय कहलाती है।"

प्रो० हैलेण्ड के अनुसार - "कुल आय तथा बेची गई वस्तु की मात्रा के अनुपात को औसत आय कहा जाता है।"

औसत आय का अनुमान कुल आय को कुल मात्रा से भाग देकर प्राप्त होता है।

$$AR = \frac{TR}{Q} = \frac{P \times Q}{Q} = P$$

सीमान्त आय या आगम (Marginal Revenue)

फर्गुसन के अनुसार - " एक फर्म द्वारा अपने उत्पादन की एक इकाई कम या अधिक बेचने से कुल आय में जो अंतर आता है उसे सीमान्त आय कहा जाता है।

$$MR = \frac{\text{बेची गई मात्रा में परिवर्तन}}{\text{कुल आगम में परिवर्तन}} = \frac{\Delta TR}{\Delta Q} = TR_n - TR_{n-1}$$

आगम की विभिन्न धारणाएँ

Output	T.R	Marginal Rev.	Average Rev.
0	0	0	0
1	10	10 - 0 = 10	10 ÷ 1 = 10
2	18	18 - 10 = 8	18 ÷ 2 = 9
3	24	24 - 18 = 6	24 ÷ 3 = 8
4	28	28 - 24 = 4	28 ÷ 4 = 7
5	30	30 - 28 = 2	30 ÷ 5 = 6
6	30	30 - 30 = 0	30 ÷ 6 = 5
7	28	28 - 30 = -2	28 ÷ 7 = 4

उदाहरण के लिये जब 4 वस्तुओं की बिक्री की जाती है तो कुल आय ₹ 28 है तथा जब 5 वस्तुओं की बिक्री

की जाती है तो कुल आय बढ़कर ₹ 30 हो जाती है अतएव पांचवी वस्तु की सीमांत आय ₹ 30 - ₹ 28 = ₹ 2 होगी।

जैसे - जैसे उत्पादन अधिक किया जा रहा है सीमांत आय कम होती जा रही है। छठी इकाई की

माँग की कीमत लोच का महत्व तथा इसका व्यावसायिक/प्रबंधकीय उपयोग

→ कीमत निर्धारण में महत्व - मांग की लोच कीमत निर्धारण में सहायक सिद्ध होती है।

- एकाधिकार के अंतर्गत कीमत निर्धारण
- संयुक्त पूर्ति वाली वस्तु का कीमत निर्धारण
- उत्पादन के साधनों का पुरस्कार
- राशिपातन

→ सरकारी नीति निर्माण में महत्व - माँग की लोच की धारणा सरकारी नीतियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- वित्त मंत्री को लाभ
- करों के भार का वितरण
- कीमत नियंत्रण नीति
- विनिमय दर का निर्धारण
- उद्योगों को संरक्षण

→ माँग पूर्वानुमान - एक व्यवसायी इसके द्वारा अपनी वस्तु की माँग पर परिवर्तनशील आय स्तरों के प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

→ रेलभाड़े की दरों का निर्धारण

→ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

मजदूरी निर्धारण -

पूर्ति का सिद्धान्त

वस्तु की उस मात्राओं से है जिन्हें कि विक्रेता विभिन्न संभव कीमतों पर निश्चित समय में बेचने को तैयार होता है।

थॉमस के अनुसार - "वस्तुओं की पूर्ति वह मात्रा है जो कि बाजार में किसी निश्चित समय पर विभिन्न कीमतों पर बिकने के लिये प्रस्तुत की जाती है"

किसी वस्तु की पूर्ति तथा पूर्ति की मात्रा में अंतर

पूर्ति की मात्रा - पूर्ति की मात्रा एक निश्चित कीमत पर बिक्री के लिये उपलब्ध वस्तु की निश्चित मात्रा

पूर्ति - पार्किन के अनुसार- "पूर्ति की धारणा से किसी वस्तु की कीमत तथा पूर्ति की जाने वाली मात्रा में पाए जाने वाले कुल संबंध से है"

पूर्ति वक्र

पूर्ति वक्र अनुसूची को ग्राफ के रूप में प्रकट करता है। इसके द्वारा किसी वस्तु की कीमत तथा पूर्ति की मात्रा में धनात्मक संबंध प्रकट होता है। यह दो प्रकार की होती है।

व्यक्तिगत पूर्ति- इसकी नीचे से ऊपर की ओर ढलान से पता चलता है कि वस्तु की कीमत तथा उसकी पूर्ति में धनात्मक संबंध है

चित्र में यदि कीमत ₹ 5 या इससे कम होगी तो विक्रेता वस्तु बेचने को तैयार नहीं होगा जिस कीमत से नीचे विक्रेता वस्तु को बेचने को तैयार नहीं होता उसे सुरक्षित कीमत कहते है।

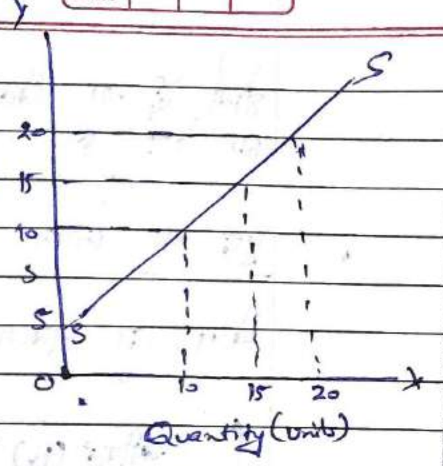

बाजार पूर्ति वक्र

यह संपूर्ण उद्योग का पूर्ति वक्र है। उद्योग की सभी फर्मों के पूर्ति वक्रों के समस्तर जोड़ द्वारा बाजार पूर्ति वक्र को पता लगाया जाता है।

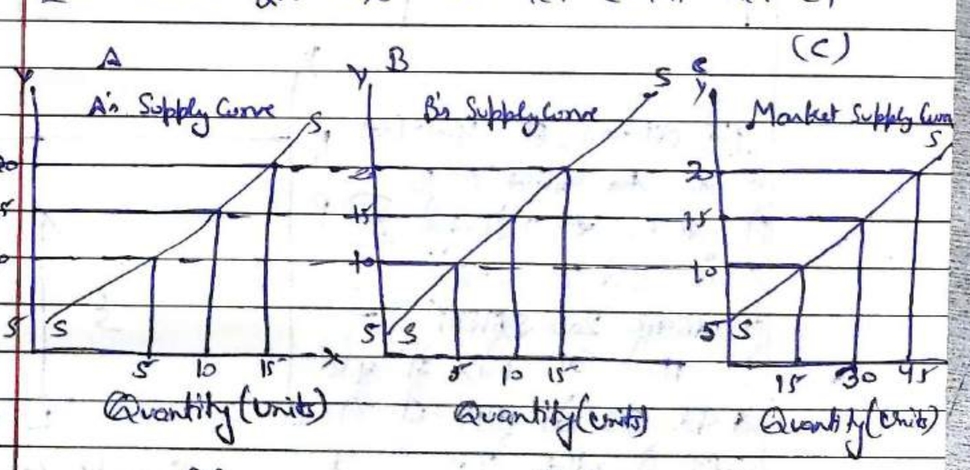

बाजार पूर्ति वक्र बाजार में किसी एक वस्तु का उत्पादन करने वाली सभी फर्मों के पूर्ति वक्रों का समस्तरीय जोड़ है।

पूर्ति का नियम

पूर्ति का नियम यह बतलाता है कि अन्य बातें समान रहने पर जितनी कीमत अधिक होती है उतनी ही पूर्ति अधिक

होती है या जितनी कीमत कम होती है उतनी ही पूर्ति कम होती है।

पूर्ति के नियम की व्याख्या– इसको तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है –

कीमत (P_x) ₹	पूर्ति (S_x)
10	100
11	200
12	300

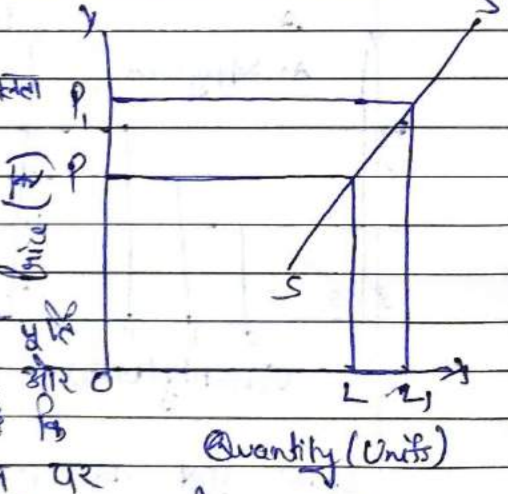

पूर्ति तालिका से पता चलता है कि जब कीमत ₹ 10 से बढ़कर ₹ 11 हो जाती है तो पूर्ति 100 इकाइयों से बढ़कर 200 इकाइयाँ हो जाती थी चित्र में पूर्ति वक्र SS के ऊपर की ओर ढलान से ज्ञात होता है कि वस्तु की कीमत बढ़ने पर पूर्ति भी बढ़ रही है। जब कीमत OP से बढ़कर OP_1 हो जाती है तो पूर्ति OL से बढ़कर OL_1 हो जाती है।

पूर्ति के नियम की मान्यताएँ

(i) उत्पादन के कारकों की पूर्ति तथा कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होता।

(ii) उत्पादन की तकनीक में कोई परिवर्तन नहीं होता।

(iii) फर्म के उद्देश्य में परिवर्तन नहीं होता।

(iv) भविष्य में वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने की संभावना नहीं है।

पूर्ति की लोचकामहत्व

(1) कीमत निर्धारण तथा पूर्ति की लोच

(2) साधन कीमत का निर्धारण तथा पूर्ति की लोच

(3) कर प्रणाली तथा पूर्ति की लोच

Unit- II
Theory Of Production

Ch-5

उत्पादन का सिद्धान्त

उत्पादन के सिद्धान्त में हम उत्पादन के भौतिक पक्ष तथा लागत के सिद्धांत में हम उत्पादन के मौद्रिक पक्ष को देखते है, उत्पादन निर्णय लेते समय उत्पादित वस्तुओं की संख्या ही नहीं बल्कि उन होने वाले खर्चे का भी ध्यान रखते है।

उत्पादन सिद्धान्त क्या है

वह क्रिया जिससे वस्तुएँ उपलब्ध हो पाती है उत्पादन कहलाती है। उत्पादन का वह मार्ग है जिसके द्वारा वस्तुओं तथा सेवाओं के रूप में धन उपयोग के लिये उपलब्ध हो जाता है जो उत्पादन का संचालन करती है उत्पादक या फर्म कहलाती है।

उत्पादन का सिद्धान्त भी आगतों तथा उत्पादन के बीच संबंध की व्याख्या करने का प्रयास करता है। उत्पादन के सिद्धान्त का सम्बन्ध मुख्यतः दो बातों से है– (1) उत्पादन फलन (2) उत्पादन के नियम या प्रतिफल के नियम

उत्पादन फलन या फंक्शन

उत्पादन फलन किसी वस्तु की वह मात्रा है उत्पादन की मात्रा तथा उसके उत्पादन के लिए आवश्यक उत्पादन के साधनों के भौतिक अथवा तकनीकी संबंध को कहलाता है।

उत्पादन फलन को इस formula द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।

$$Y = f(L, K, S)$$

वाटसन के अनुसार – "एक फर्म के भौतिक उत्पादन तथा उत्पादन के भौतिक साधनों के संबंध को उत्पादन फलन का नाम दिया जाता है।"

कोत्सुवियानी के अनुसार – " उत्पादन फलन एक विशुद्ध तकनीकी संबंध है जो उत्पादन के साधनों तथा उत्पादन की मात्राओं के संबंध को प्रकट करता है।"

उत्पादन फलन के प्रकार

(1) अनुपातों में परिवर्तन होने से उत्पादन फलन
⇓
एक परिवर्तनशील साधन में परिवर्तन
⇓
परिवर्तनशील अनुपात का नियम

(2) पैमाने में परिवर्तन होने से उत्पादन फलन
⇓
सभी साधनों का एक ही अनुपात में परिवर्तन
⇓
पैमाने के प्रतिफल का नियम

(3) पैमाने या अनुपातों में परिवर्तन होने से उत्पादन फलन
⇓
दो या दो से अधिक आगतों में परिवर्तन जो स्थानापन्न
⇓
सम-उत्पाद वक्रों की सहायता से व्याख्या

उत्पादन का नियम

किसी वस्तु का उत्पादन आगतों की मात्रा तथा उत्पादन तकनीक पर निर्भर करता है। यदि उत्पादक केवल एक ही उत्पादन के साधन में वृद्धि अथवा कमी के द्वारा उत्पादन में परिवर्तन करता है तथा उसके फलस्वरूप उत्पादन के साधनों के मिश्रण का अनुपात बदलता है तो उत्पादन तथा उत्पादन के साधनों के

इस आनुपातिक संबंध को साधन के प्रतिफल का नियम कहते हैं। इसके विपरीत यदि उत्पादक सभी साधनों में समान अनुपात में परिवर्तन करता है तो इस स्थिति को पैमाने के प्रतिफल का नियम कहते हैं।

उत्पादन के नियम

साधन के प्रतिफल	पैमाने के प्रतिफल
एक परिवर्तनशील साधन बाकी स्थिर साधन	सभी साधन परिवर्तनशील
↓	↓
प्रधान रूप से अल्पकालीन विश्लेषण	दीर्घकालीन विश्लेषण
↓	↓
साधन अनुपात में परिवर्तन आता है	साधन अनुपात स्थिर रहता है।

साधन के प्रतिफल के द्वारा उत्पादन

जब उत्पादन के स्थिर साधन के साथ परिवर्तनशील साधन की अधिक इकाइयों का प्रयोग किया जाएगा, कुल उत्पादन में बढ़ती हुई दर पर वृद्धि होगी। इसके पश्चात कुल उत्पादन में स्थिर दर पर वृद्धि हो सकती है पर अन्त में एक अवस्था ऐसी आएगी जब कुल उत्पादन में घटती हुई दर से वृद्धि होगी। इसके तीन रूप हो सकते हैं -

- साधन के बढ़ते हुए प्रतिफल
- साधन के स्थिर प्रतिफल
- साधन के ह्रासे हुए प्रतिफल

आधुनिक अर्थशास्त्री साधन के प्रतिफल की उपरोक्त

तीनों अवस्थाओं को एक ही नियम द्वारा देखा जा सकता है। इस नियम को घटते-बढ़ते अनुपात का नियम कहा जाता है।

घटते-बढ़ते अनुपात का नियम

घटते-बढ़ते अनुपात का नियम वह नियम है जो स्थिर तथा परिवर्तनशील साधनों के विभिन्न अनुपातों में प्रयोग करने के फलस्वरूप कुल उत्पादन में होने वाले परिवर्तनों को प्रकट करता है।

उत्पादन के दो साधन होते हैं - भूमि तथा श्रम। भूमि एक स्थिर साधन है। श्रम एक परिवर्तनशील साधन है मान लीजिए आपके पास दो हेक्टेयर भूमि है आप एक श्रमिक को काम पर लगाकर टमाटर की खेती करते हैं। अतएव श्रम तथा भूमि का अनुपात 1:2 होगा। यदि आप श्रम की संख्या बढ़ाकर 2 कर देते हैं तो भूमि तथा श्रम का अनुपात बदलकर 2:2 हो जाएगा। अर्थात साधनों के अनुपात में परिवर्तन होने के कारण उत्पादन की मात्रा में विभिन्न दरों से परिवर्तन होगा। अर्थशास्त्र में इस प्रवृत्ति को घटते-बढ़ते अनुपात का नियम कहा जाता है।

प्रो० एच० आर० बैरिमन के अनुसार - "यह वास्तव में एक नियम नहीं है, यह तो अधिकतर उत्पादन प्रक्रियाओं की एक सामान्य विशेषता है।"

परिभाषा - प्रो० लेफ्टविच के अनुसार - "घटते-बढ़ते अनुपात का नियम यह बताता है कि यदि प्रति इकाई समयानुसार एक साधन की मात्रा में समान इकाइयों में वृद्धि की जाती है और अन्य साधनों की मात्राएं स्थिर रखी जाती हैं तो वस्तु की

कुल उत्पत्ति में वृद्धि होगी, लेकिन एक बिंदु के बाद प्राप्त उत्पत्ति की वृद्धियाँ धीरे-धीरे कम होती जायेंगी।"

- मान्यताएँ —
  (i) उत्पादन का एक साधन परिवर्तनशील है तथा बाकी अन्य सभी साधन स्थिर हैं।
  (ii) परिवर्तनशील साधन की सभी इकाइयाँ स्वरूप हैं
  (iii) उत्पादन तकनीक में कोई परिवर्तन नहीं होता।
  (iv) उत्पादन के साधनों का विभिन्न अनुपातों में प्रयोग किया जा सकता है।

उत्पादन की तीन अवस्थाएँ

अर्थशास्त्रियों ने उत्पादन की तीन अवस्थाओं की पहचान की है —

(i) अवस्था - I : जब परिवर्ती साधन का औसत उत्पाद (AP) बढ़ता है जो मूल बिन्दु 'O' से आरंभ होती ~~अवस्था - I~~ है जहाँ AP = MP ।

(ii) अवस्था - II : जब परिवर्ती साधन का औसत उत्पाद (AP) घटता है परंतु TP निरंतर बढ़ता है जब तक कि वह अपने उच्चतम बिंदु पर नहीं पहुँच जाता जहाँ MP = 0 । इन बिंदुओं के बीच AP घटता है। MP भी घटता है जब तक कि वह शून्य नहीं हो जाता।

(iii) अवस्था - III : जब परिवर्ती साधन का औसत उत्पाद (AP) घटता है तथा TP भी घटना आरंभ हो जाता है। जब MP ऋणात्मक हो जाता है।

भूमि की इकाइयाँ	श्रम की इकाइयाँ	औसत (AP) उत्पाद	कुल उत्पाद (TP)	सीमांत उत्पाद MP	तीन अवस्थाओं का वर्णन
					अवस्था - I
1	1	2	2	2	AP बढ़ता है; MP बढ़ता है।
1	2	2.5	5	3	शुरू में बढ़ता है फिर गिरता है
1	3	3	9	4	इसका अंत तब होता है
1	4	3	12	3	जब MP = AP
					अवस्था - II
1	5	2.8	14	2	AP घटती है ; TP बढ़ती है
1	6	2.5	15	1	MP घटती है जब तक शून्य
1	7	2.1	15	0	नहीं हो जाती। TP अधिकतम होती है।
					अवस्था - III
1	8	1.7	14	-1	AP घटती है तथा MP ऋणात्मक होती है। TP घटना आरंभ हो जाती है।

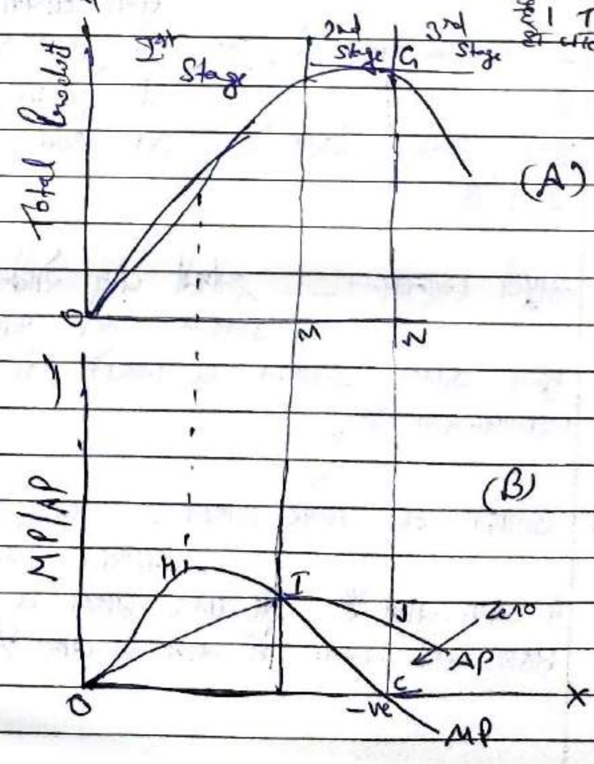

लागू होने की दशाएँ या कारण

घटते - बढ़ते प्रतिफल के लागू होने की मुख्य दशाएँ या कारण निम्नलिखित है

(1) साधनों की अविभाज्यता - उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादन के कुछ साधन अविभाज्य होते है। जैसे मशीन। उदाहरण - पैन बनाने की केवल एक मशीन है। चाहे आप एक दर्जन पैन बनाएँ या 10 दर्जन पैन बनाए। यदि कम पैन बनाऐंगे तो प्रति इकाई लागत अधिक होगी और यदि अधिक तो औसत लागत घट जाएगी। तथा प्रतिफल बढ़ जाएगे।

(2) साधन अनुपात में परिवर्तन :- किसी वस्तु का उत्पादन सभी साधनों का फल है उदाहरण - 10 हेक्टेयर के एक खेत पर 5 श्रमिक काम करते हैं। इन पाँच श्रमिकों की मेहनत के कारण भूमि का पूर्ण प्रयोग होता है इस स्थिति में भूमि - श्रम अनुपात 2:1 है

(3) अपूर्ण स्थानापन्न - श्रीमती जोन रोबिन्सन के अनुसार घटते प्रतिफल की अवस्था के लागू होने का मुख्य कारण उत्पादन के साधनों में पाई जाने वाली अपूर्ण स्थानापन्नता है।

(4) उत्पादन का स्थिर साधन - जब स्थिर साधन को परिवर्तन शील साधन के साथ प्रयोग में लाया जाता है, तो स्थिर साधन का अनुपात परिवर्तन शील साधन की तुलना में कम हो जाता है।

नियम का लागू होना

अर्थशास्त्रियों के अनुसार परिवर्तनशील अनुपात का नियम सार्वभौमिक है। इसकी तीन अवस्थाएं है - बढ़ते प्रतिफल की अवस्था (ii) घटते प्रतिफल की अवस्था (iii) समान प्रतिफल की अवस्था।

पैमाने के प्रतिफल

पैमाने के प्रतिफल कुल उत्पादन में होने वाले परिवर्तन के उस व्यवहार को व्यक्त करते हैं जो सभी आगतों में समान अनुपात में परिवर्तन होने के कारण उत्पन्न होता है। सभी साधनों में समान अनुपात में वृद्धि होने के कारण उत्पादन में होने वाली वृद्धि है।

परिभाषा

प्रो० कोत्सुवियानी के अनुसार – " पैमाने के प्रतिफल शब्द का संबंध सभी साधनों में समान अनुपात से होने वाले परिवर्तन के कारण उत्पादन में होने वाले परिवर्तन से है।"

व्याख्या – पैमाने के प्रतिफल से अभिप्राय सभी साधनों में समान अनुपात में वृद्धि के कारण उत्पादन में होने वाली वृद्धि से है। उत्पादन में होने वाली वृद्धि को पैमाने का प्रतिफल कहा जाता है।

प्रारंभिक उत्पादन फलन –

$$P = f(L, K)$$

यदि उत्पादन के दोनों साधनों अर्थात् श्रम (L) और पूँजी (K) को समान अनुपात (m) में बढ़ाया जायेगा तो कुल उत्पादन बढ़कर P_1 हो जाएगा।

$$P_1 = f(mL, mK)$$

पैमाने के प्रतिफल

श्रम की इकाइयाँ	पूँजी की इकाइयाँ	श्रम तथा पूँजी में प्रतिशत वृद्धि	कुल उत्पाद	कुल उत्पादन में % वृद्धि	पैमाने के प्रतिफल
1	2		10		Increasing
2	4	100%	30	200%	
3	6	50%	60	100%	Constant
4	8	33%	80	33%	
5	10	25%	100	25%	
6	12	20%	110	10%	Decreasing
7	14	16%	120	9%	
8	16	14%	125	4%	

(i) यदि P_1 उसी अनुपात में बढ़ता है जिस अनुपात में उत्पादन के साधनों में वृद्धि हुई है तो इसे पैमाने का समान प्रतिफल कहा जाएगा। $\frac{P_1}{P} = m$

(ii) यदि साधनों में होने वाले परिवर्तन के अनुपात में उत्पादन की मात्रा P_1 में कम अनुपात में परिवर्तन होता है तो इसे पैमाने का घटता हुआ प्रतिफल कहा जायेगा।

$$\frac{P_1}{P} < m$$

(iii) यदि साधनों में होने वाले परिवर्तन के अनुपात में उत्पादन की मात्रा P_1 में अधिक अनुपात में परिवर्तन होता है तो इसे पैमाने का बढ़ता हुआ प्रतिफल कहा जायेगा।

$$\frac{P_1}{P} > m$$

पैमाने के प्रतिफल के पक्ष

Aspects of Returns to Scale.

एक साधन के प्रतिफल की तरह पैमाने के प्रतिफल के भी तीन पक्ष हैं:

(1) पैमाने के बढ़ते प्रतिफल – पैमाने के बढ़ते प्रतिफल, उत्पादन की उस स्थिति को प्रकट करते हैं जिसमें यदि सभी साधनों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाये तो उत्पादन में उससे अधिक अनुपात में वृद्धि होती है।

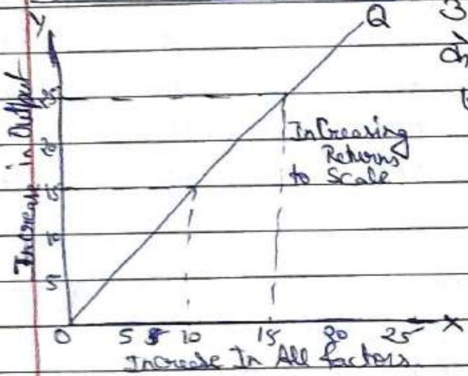

(2) पैमाने के स्थिर प्रतिफल – पैमाने के स्थिर या समान प्रतिफल, उत्पादन की उस स्थिति को प्रकट करते हैं जिसमें यदि सब साधनों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाएगा तो उत्पादन में उसी अनुपात में वृद्धि होगी।

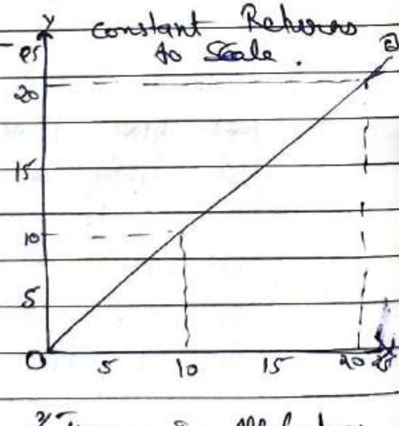

मान लीजिए श्रम तथा पूँजी की मात्रा में 10 प्रतिशत की वृद्धि होती है इसके फलस्वरूप उत्पादन में भी 10 प्रतिशत की वृद्धि होगी।

(3) पैमाने के घटते प्रतिफल – पैमाने के घटते प्रतिफल उत्पादन की उस स्थिति को प्रकट करते हैं जिसमें यदि सभी साधनों को निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाएगा तो उत्पादन में उससे कम अनुपात में वृद्धि होगी।

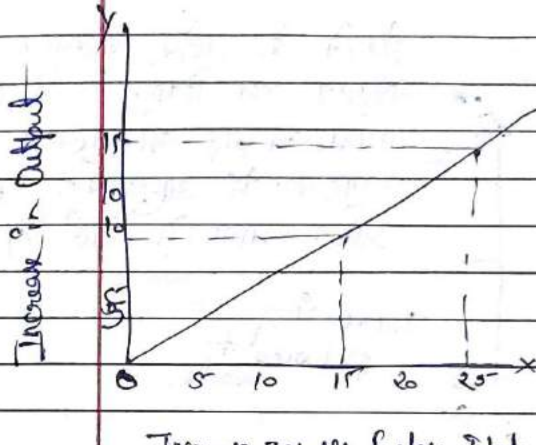

पैमाने के प्रतिफल के नियम तथा सम-उत्पाद विश्लेषण

(1) सम उत्पाद वक्र क्या है? – सम-उत्पाद वक्र एक तकनीकी संबंध है जो यह प्रकट करता है कि साधनों को उत्पादन में किस प्रकार परिवर्तित किया जाता है यह एक कुशलता संबंध है जो साधनों की एक दी हुई मात्रा के प्रयोग के फलस्वरूप उत्पादन की अधिकतम मात्रा को प्रकट करता है।

मान्यताएँ

सम-उत्पाद वक्रों की मुख्य मान्यताएँ निम्नलिखित हैं:

- उत्पादन के दो साधन
- स्थिर तकनीक
- विभाज्य साधन
- तकनीकी प्रतिस्थापन की संभावना
- कुशल संयोग

व्याख्या

(1) पैमाने के बढ़ते प्रतिफल – पैमाने के बढ़ते प्रतिफल से अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें साधनों की वृद्धि की तुलना में उत्पादन में आनुपातिक वृद्धि अधिक मात्रा में होती है।

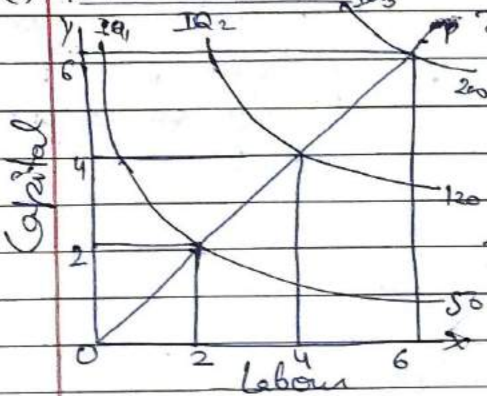

(2) पैमाने के घटते प्रतिफल :

पैमाने के घटते प्रतिफल से अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें साधनों में वृद्धि की तुलना में उत्पादन में आनुपातिक वृद्धि कम मात्रा में होती है।

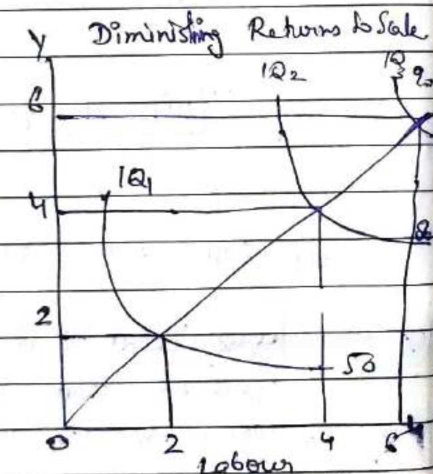

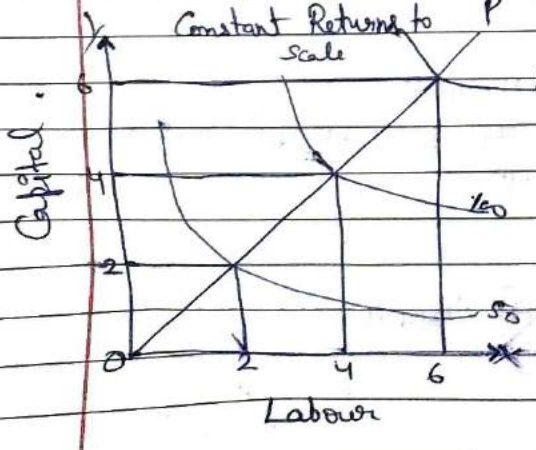

(3) पैमाने के समान प्रतिफल

पैमाने का समान प्रतिफल उस स्थिति को व्यक्त करता है जिसमें उत्पादन में आनुपातिक विस्तार या वृद्धि साधनों के आनुपातिक विस्तार या वृद्धि के बराबर होती है।

पैमाने की बचतें

पैमाने की बचतों से अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें उत्पादन के स्तर के बढ़ने के फलस्वरूप या तो प्रति इकाई उत्पादन लागत कम हो जाती है या प्रति इकाई साधन का उत्पादन बढ़ जाता है।

इसको दो भागों में बाँटा जा सकता है।

पैमाने की आंतरिक बचतें – आन्तरिक बचतें वे बचतें या किफायतें हैं जो किसी फर्म के आकार में विस्तार होने के कारण उत्पन्न होती हैं तथा केवल उसी फर्म को प्राप्त होती हैं।

प्रो० केयरनक्रॉस ने आन्तरिक बचतों को दो भागों में बाँटा है।

* वास्तविक बचतें तथा * धन संबंधी बचतें

- श्रम संबंधी बचतें
- तकनीकी बचतें
- स्टॉक संबंधी बचतें
- विक्रय संबंधी बचतें
- प्रबंधकीय बचतें
- यातायात संबंधी बचतें

बाहरी बचतें – केयरनक्रॉस के शब्दों में, "बाहरी बचतें वे लाभ हैं जो कई फर्मों व उद्योग को प्राप्त होती हैं जब जबकि किसी उद्योग के उत्पादन पैमाने में वृद्धि होती है। ये बचतें किसी फर्म को अपने आकार में वृद्धि करने से प्राप्त नहीं होती बल्कि ये बचतें किसी फर्म को उस स्थिति में प्राप्त होती हैं जब दूसरी फर्में अपना विस्तार करती हैं।"

बाहरी बचतों के प्रकार

- केन्द्रीयकरण की बचतें
- सूचना की बचतें
- विकेन्द्रीयकरण की बचतें।

पैमाने की हानियाँ या घटते प्रतिफल के कारण

सभी साधनों की एक निश्चित प्रतिशत वृद्धि, एक सीमा के पश्चात उत्पादन में अनुपात से कम वृद्धि लाती है। इसके आकार के कारण दो प्रकार की हानियाँ उत्पन्न होती है।

- आंतरिक हानियाँ - - प्रबंध की कठिनाई
  तकनीकी कठिनाई
- बाहरी हानियाँ - ये हानियाँ उद्योग की सभी फर्मों को उठानी पड़ती हैं, इनका संबंध किसी एक विशेष फर्म से नहीं होता।

Ch-6 Producer's Optimisation -

Isoquant Curve.

उत्पादक की अनुकूलतम स्थिति - सम उत्पाद वक्र विश्लेषण

एक उत्पादक की अनुकूलतम स्थिति वह स्थिति है जिसमें उन्हें अधिकतम लाभ प्राप्त हो रहे होते है। प्रत्येक उत्पादक का उद्देश्य अधिकतम लाभ प्राप्त करना होता है। उत्पादकों की अनुकूलतम स्थिति का अनुमान लगाने के लिये समउत्पाद विश्लेषण का प्रयोग करते है।

Isoquant या Iso-product शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। Iso = equal और quant = quantity. या Product = output. अर्थात समान उत्पाद या समान मात्रा।

परिभाषा

फर्गुसन के अनुसार - "सम - उत्पाद वक्र वह वक्र है जो साधनों के उन सभी संभावित संयोगों को प्रकट करती है जो उत्पादन के निश्चित स्तर को उत्पादित करने के लिये भौतिक रूप से समर्थ होते हैं।

मान्यताएँ

सम -उत्पाद की मुख्य मान्यताएँ निम्नलिखित है

- स्थिर तकनीक
- तकनीकी प्रतिस्थापन की संभावना
- विभाज्य साधन
- उत्पादन के दो साधन
- कुशल संयोग

व्याख्या

तालिका के विभिन्न संयोगों द्वारा इसे प्रस्तुत किया जा सकता है -

संयोग	पूँजी	श्रम	उत्पाद घड़ियाँ
A	90	10	100
B	60	20	100
C	40	30	100
D	30	40	100

100 घड़ियाँ पूँजी तथा श्रम के निम्न संयोगों द्वारा बनाई जा सकती है।

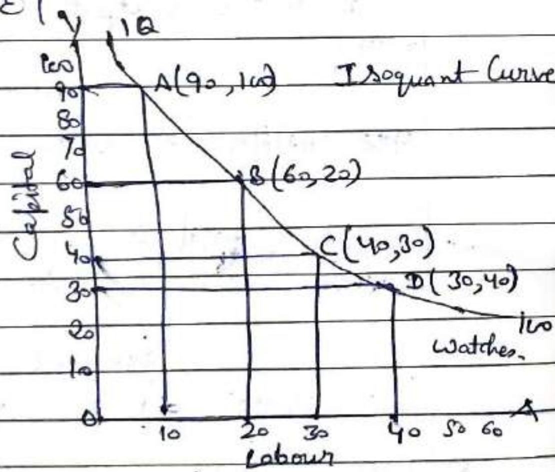

सम-उत्पाद मानचित्र

कॉल्स और रोजन के अनुसार "सम-उत्पाद मानचित्र एक दिये हुये उत्पादन फलन के अनुरूप सभी सम-उत्पाद वक्रों का एकत्रीकरण है।"

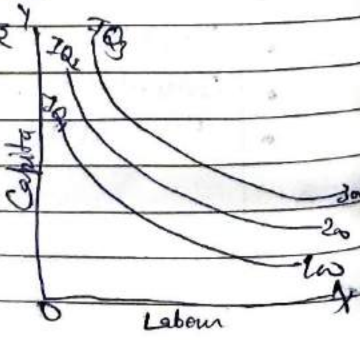

सम-उत्पाद वक्रों की विशेषताएं -

- सम-उत्पाद वक्रों का ढलान ऊपर से नीचे की ओर होता है।
- सम-उत्पाद वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होती है।
- दो सम-उत्पाद वक्र कभी एक दूसरे को काट नहीं सकती
- सम-उत्पाद वक्र जितनी ऊँची होती है उतनी ही अधिक उत्पादन मात्रा को प्रकट करती है।
- साधनों के प्रतिस्थापन की सुगमता का ज्ञान
- रिज रेखाएँ.

रिज रेखाएँ (Ridge Lines)

रिज रेखाएँ विभिन्न सम-उत्पाद रेखाओं के उन बिंदुओं को मिलाती हैं जो उत्पादन की आर्थिक सीमाएँ निर्धारित करते है।

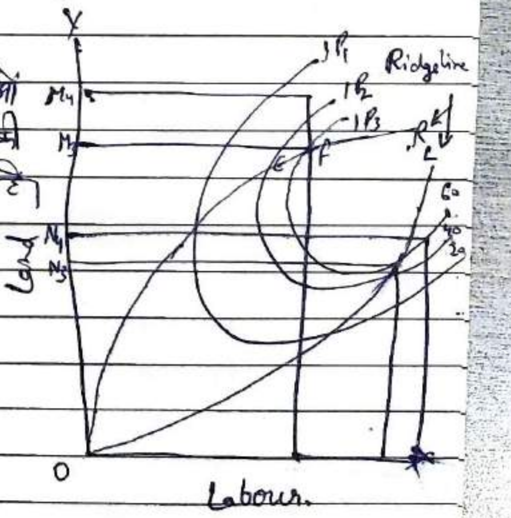

आर्थिक क्षेत्र - ये रिज रेखाएँ उत्पादन के आर्थिक क्षेत्र की सीमाएँ हैं। इसके अंतर्गत ही उत्पादन करना लाभदायक होगा।

विस्तार पथ (Expansion Path) – विस्तार पथ उन सभी बिंदुओं के बिंदु पथ को बतलाता है जो उत्पादन के विभिन्न स्तरों के अनुसार साधनों के न्यूनतम लागत संयोग को दर्शाता है।

परिभाषा

स्टोनियर तथा हेग के अनुसार – "विस्तार पथ वह रेखा है जो उत्पादन के विभिन्न स्तरों को उत्पादित करने की न्यूनतम लागत विधि को प्रकट करती है जबकि साधन कीमतें समान रहती हैं।"

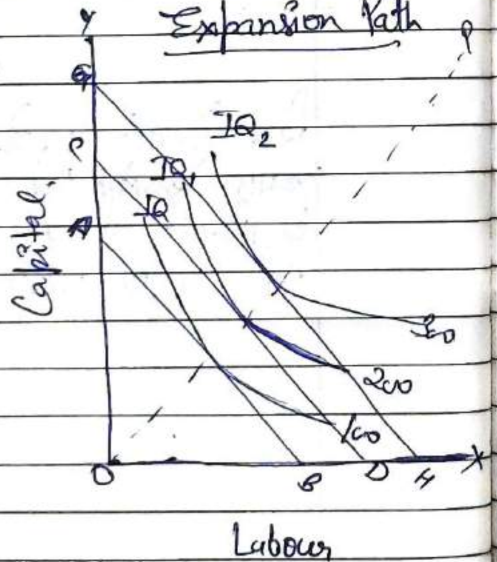

Ch-7

लागत का सिद्धान्त
Theory Of Costs

उत्पादन लागत से अभिप्राय उन मौद्रिक खर्चों से लिया जाता है जो उस वस्तु का उत्पादन करने के संबंध में किये जाते हैं।

लागत शब्द का प्रयोग कई अर्थों में किया जाता है।

(1) मौद्रिक लागत

जे. एल. हेन्सन के शब्दों में, "किसी वस्तु की एक निश्चित मात्रा का उत्पादन करने के लिये उत्पादन के साधनों को जो कुछ मौद्रिक भुगतान करना पड़ता है, उसे मौद्रिक लागत कहते हैं।"

जैसे – श्रमिकों को दी जाने वाली मजदूरी, ऋणों के लिये दिया जाने वाला ब्याज, इमारतों के लिये दिया जाने वाला किराया, यातायात के लिये किया गया खर्च आदि।

वास्तविक लागत

मार्शल के अनुसार, "किसी वस्तु के उत्पादन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में लगे हुये विभिन्न प्रकार के श्रम तथा इसे तैयार करने में लगी पूंजी के लिये बचत करने के लिये आवश्यक उपभोग स्थगन में निहित सभी प्रयत्न तथा त्याग मिलकर उस वस्तु की वास्तविक उत्पादन लागत कहलायेगी।"

P.T.O

लेखाकर्म या व्यावसायिक लागत

मिकसन के अनुसार, " लेखाकर्म लागत से अर्थ नकद खर्चे, ऐतिहासिक लागतें, घिसावट तथा अन्य बही खाता प्रविष्टियों से है"

अवसर लागत

प्रो. लेफ्टविच के अनुसार, " किसी वस्तु की अवसर लागत उन परित्यक्त वैकल्पिक पदार्थों का मूल्य होती है जिन्हें इस वस्तु के उत्पादन में लगाए गए साधनों द्वारा उत्पन्न किया जा सकता है।"

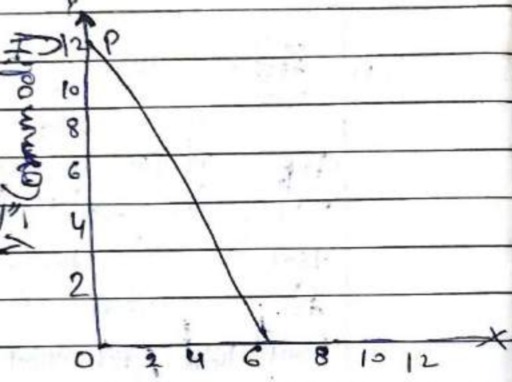

आर्थिक लागत

आर्थिक लागत उन मौद्रिक भुगतानों जो एक फर्म द्वारा उन बाहरी व्यक्ति को जो साधनों की पूर्ति करते है तथा स्वयं स्वामित्व एवं स्वयं प्रयोग साधनों की उस त्यागी गई आय, के रूप में की जाती है।

सामाजिक लागत

आधुनिक अर्थशास्त्र के अनुसार, - " किसी उत्पादन की सामाजिक लागत मुद्रा की उस मात्रा के रूप में की जाती है जो उस वस्तु के उत्पादन के कारण जिन लोगों को हानि उठानी पड़ती है, उनकी क्षतिपूर्ति करके उन्हें उपयोगिता के पूर्व स्तर पर बनाए रखने के लिये पर्याप्त होती है।

निजी लागत

मिल्लर के अनुसार; " निजी लागत वह लागत है जो किसी फर्म या व्यक्तिगत उत्पादक को अपने स्वयं के निर्णयों के कारण खर्च करनी पड़ती है।"

स्पष्ट लागतें

लेफ्टविच के अनुसार, " स्पष्ट लागतें, वे नकद भुगतान है जो फर्म द्वारा बाहरी व्यक्तियों को उनकी सेवाओं तथा वस्तुओं के लिये किये जाते हैं।"

निहित लागतें

लेफ्टविच के अनुसार, " उत्पादन की निहित लागतें स्वयं के स्वामित्व एवं स्वयं के द्वारा लगाए गए साधनों की लागतें है।"

लागत फलन

लागत फलन उसके उत्पादन तथा लागत के संबंध को व्यक्त करता है। लागत फलन का निर्धारण उत्पादन फलन तथा आगतों की कीमत करती है। लागत फलन भी अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन दोनों प्रकार का होता है।

लागत का सिद्धांत

- लागत का परम्परावादी सिद्धांत
- लागत का आधुनिक सिद्धांत

लागत का परम्परावादी सिद्धान्त

• लागत तथा उत्पादकता में पारस्परिक संबंध होता है। जिस प्रकार उत्पादकता के कुल, औसत तथा सीमांत माप होते हैं उसी प्रकार लागत के भी कुल, औसत तथा सीमांत माप होते हैं।

अल्पकालीन लागत

- कुल लागत
  - कुल स्थिर लागत
  - कुल परिवर्तनशील लागत
- औसत लागत
  - औसत स्थिर लागत
  - औसत परिवर्तनशील लागत
- सीमांत लागत

कुल लागत

कुल लागत कुल स्थिर लागत तथा कुल परिवर्तनशील लागत का जोड़ है।

$$TC = FC + VC$$

ब्राउनिंग के अनुसार, "कुल लागत उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर कुल स्थिर लागत तथा कुल परिवर्तनशील लागत का जोड़ है।"

कुल लागत, स्थिर लागत तथा परिवर्तनशील लागत के संबंध को तालिका तथा चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

कुल लागत

उत्पादन की मात्रा	स्थिर लागत	परिवर्तनशील लागत	कुल लागत
0	10	0	10
1	10	10	20
2	10	18	28
3	10	24	34
4	10	28	38
5	10	32	42
6	10	38	48
7	10	46	56
8	10	62	72

उत्पादन की मात्रा बढ़ने पर कुल लागतें भी बढ़ती जा रही है। जब उत्पाद की मात्रा शून्य है तो कुल लागत ₹10 है क्योंकि स्थिर लागत ₹10 है।

चित्र में FC स्थिर लागत है VC घटती-बढ़ती लागत को है तथा TC कुल लागत वक्र है FC तथा VC परिवर्तनशील लागतों के जोड़ को प्रकट कर रही है।

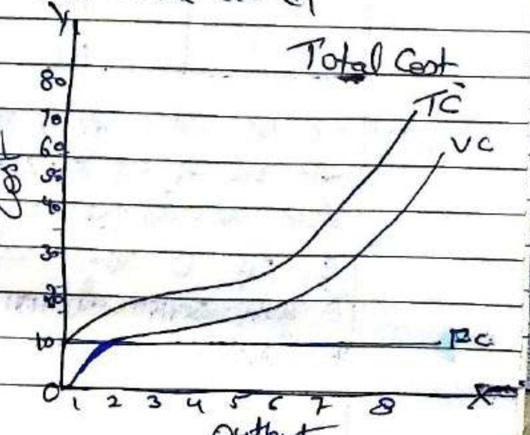

औसत लागत

फर्गुसन के अनुसार "कुल लागत को उत्पादन की मात्रा से भाग देने पर औसत लागत ज्ञात होती है।"

$$AC = \frac{TC}{Q} = AFC + AVC$$

उदाहरण- किसी वस्तु की छः इकाइयों की कुल लागत ₹ 180 है तो प्रति इकाई लागत या औसत लागत 180/6 = 30 ₹ होगी।

औसत लागत को वक्र व तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

औसत लागत

उत्पादन की मात्रा	औसत स्थिर लागत	औसत परिवर्तनशील लागत	औसत लागत
1	10	10	20
2	5	9	14
3	3.3	8	11.3
4	2.5	7.0	9.5
5	2.0	6.4	8.4
6	1.7	6.3	8
7	1.4	6.6	8
8	1.2	7.8	9

चित्र में OX पर उत्पादन तथा OY अक्ष पर लागत प्रकट की गई है। AC वक्र औसत लागत को प्रकट कर रही है। यह U आकार की होती है अर्थात् उत्पादन की मात्रा बढ़ने पर औसत लागत कम होती है।

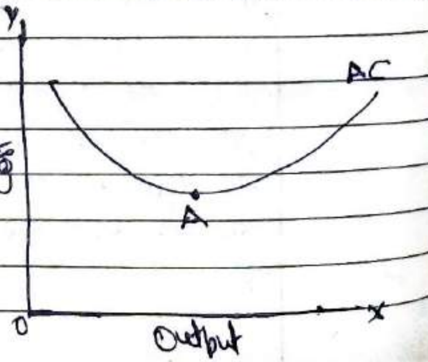

अल्पकालीन औसत लागत वक्र 'U' आकार की होती है। इसका कारण है —

- औसत स्थिर लागत तथा औसत परिवर्तनशील लागत की अंतर्क्रिया
- घटते - बढ़ते अनुपात के नियम का आधार

सीमान्त लागत

किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने से कुल लागत में जो अंतर आता है उसे सीमान्त लागत कहते हैं। इसे निम्न सूत्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।-

$$MC = TC_n - TC_{n-1}$$

मैकोनल के अनुसार, "सीमान्त लागत की परिभाषा वस्तु की एक अधिक इकाई का उत्पादन करने की अतिरिक्त लागत के रूप में की जा सकती है।"

सीमान्त लागत को तालिका तथा वक्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

सीमान्त लागत

उत्पादन की मात्रा	कुल लागत(₹)	सीमांत लागत(₹)
0	0	—
1	20	20-0 = 20
2	28	28-20 = 8
3	34	34-28 = 6
4	38	38-34 = 4
5	42	42-38 = 4
6	48	48-42 = 6
7	56	56-48 = 8
8	72	72-56 = 16

चित्र में OX अक्ष पर उत्पादन तथा OY अक्ष पर सीमान्त लागत प्रकट की गई है। MC वक्र सीमांत लागत वक्र है यह वक्र U के आकार का है उत्पादन के आरम्भ में सीमांत लागत कम हो रही है इसके पश्चात् बढ़ रही है।

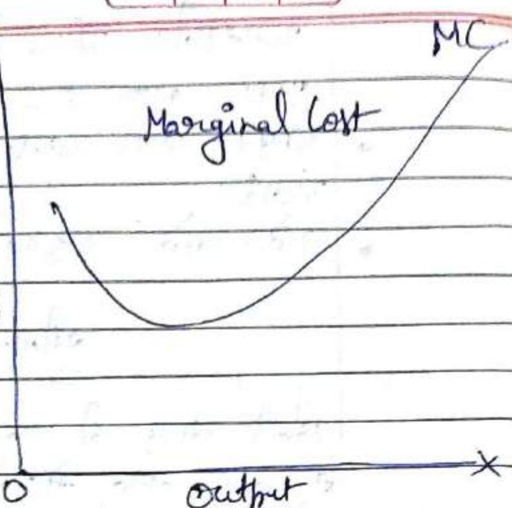

सीमांत लागत वक्र U- आकार की होती है

दीर्घकालीन में लागतें

दीर्घकाल में सभी साधन परिवर्तनशील होते हैं। फर्म के पास सभी साधन का आवश्यकतानुसार प्रयोग करके न्यूनतम लागत पर उत्पादन करने के लिये पर्याप्त समय होता है। दीर्घकाल में भी लागत की तीन धारणाएं है -

दीर्घकालीन कुल लागत

लीभाफास्की के अनुसार, "दीर्घकालीन कुल लागत उत्पादन के किसी स्तर की न्यूनतम कुल लागत है जबकि सभी साधन परिवर्तनशील हों।

दीर्घकालीन कुल लागत सदैव अल्पकालीन कुल लागत से कम होगी या उसके बराबर होगी।

$LTC \leq STC$

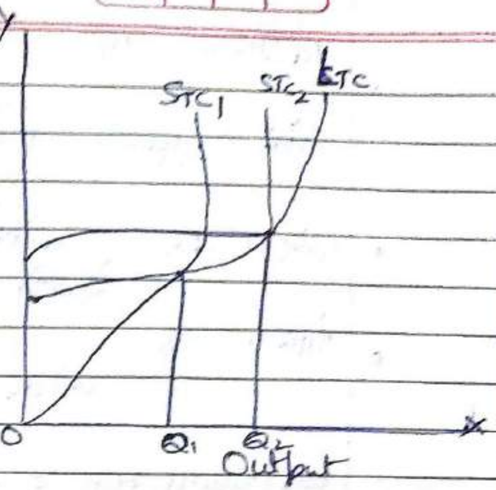

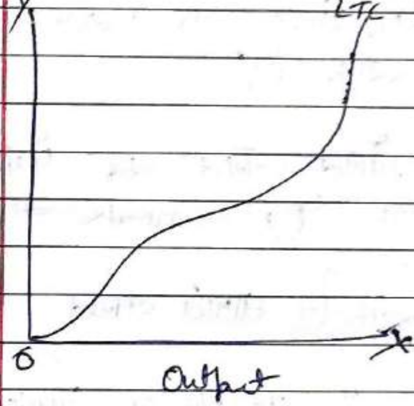

दीर्घकालीन औसत लागत वक्र या लिफाफा वक्र

मैन्सफील्ड के अनुसार, "दीर्घकालीन औसत लागत वक्र वह वक्र है जो उत्पादकता के विभिन्न स्तरों के संदर्भ में उत्पादन के प्रत्येक स्तर की प्रति इकाई न्यूनतम लागत को प्रकट करती है।"

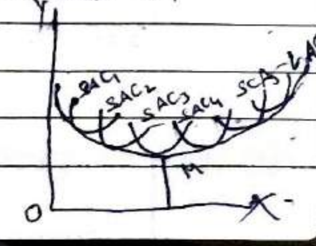

विभिन्न नाम – दीर्घकालीन औसत लागत को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है।

• लिफाफा वक्र – क्योंकि यह भी अल्पकालीन औसत लागत रेखाओं को ढक लेती है।

• योजना वक्र – कौत्सयानी के अनुसार, "दीर्घकालीन औसत लागत वक्र एक योजना वक्र है क्योंकि यह भविष्य में उत्पादन के विस्तार की योजना के संबंध में निर्णय लेने के लिये एक उद्यमी का मार्ग दर्शक है।"

दीर्घकालीन औसत लागत वक्र पैमाने की बचतें तथा हानियों के कारण 'U' आकार की होती है।

दीर्घकालीन सीमांत लागत

फर्गुसन के अनुसार, "दीर्घकालीन सीमान्त लागत उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई का प्रयोग करने से कुल लागत में होने वाली वृद्धि है जब सभी लागत क्रियात्मक रूप से समायोजित होते हैं।"

चित्र में LMC दीर्घकालीन सीमांत लागत वक्र है यह पहले गिरती हुई न्यूनतम हो जाती है तथा इसके बाद ऊपर की ओर उठने लगती है।

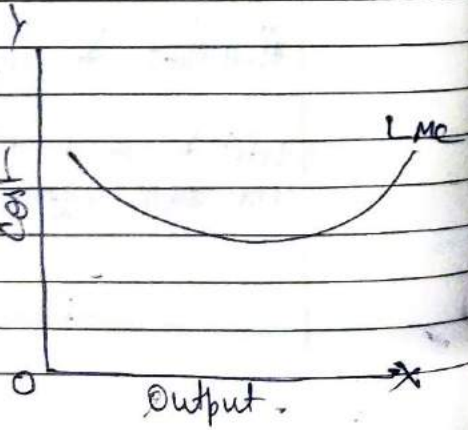

लागत का आधुनिक सिद्धान्त

लागत वक्रों के आधुनिक सिद्धांत का प्रतिपादन स्टिग्लर, एण्ड्रयूज, सार्जेन्ट फ्लोरेन्स आदि अर्थशास्त्रियों ने किया। आधुनिक सिद्धांत के अनुसार वास्तविक जीवन में लागत वक्र 'U' आकार की न होकर L आकार की होती है।

आधुनिक सिद्धांत के अनुसार दीर्घकालीन लागतें मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है।

• उत्पादन लागत – उत्पादन में वृद्धि के फलस्वरूप उत्पादन लागत कम हो जाती है।

• प्रबंधकीय लागत – उत्पादन के बड़े पैमाने पर प्रबंधकीय लागतें बढ़ सकती है। परन्तु उत्पादन लागत में होने वाली कमी प्रबंधकीय लागत में होने वाली वृद्धि से अधिक होती है।

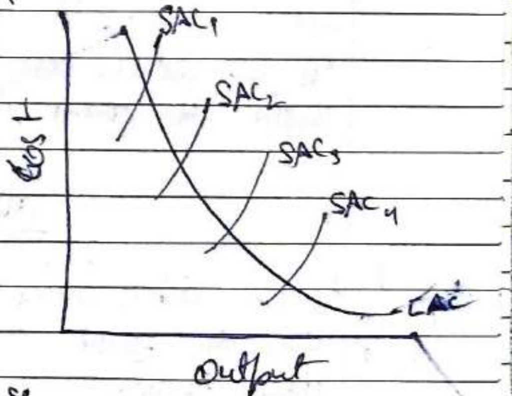

L आकार की औसत लागत वक्र

चित्र में L Shaped के LAC को दर्शाया गया है इसके L आकार होने के कारण दीर्घकालीन में उत्पादन का न्यूनतम आदर्श पैमाना होता है जिस पर सभी संबद्ध बचतें प्राप्त कर ली जाती हैं।

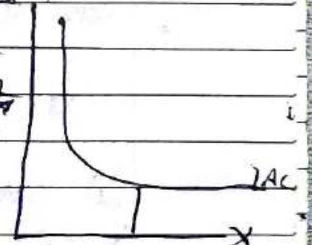

दीर्घकालीन सीमांत लागत वक्र

आधुनिक सिद्धांत के अनुसार दीर्घकालीन सीमांत लागत वक्र का आकार उससे संबंधित LAC के आकार के समान का होता है।

चित्र में Curve (LAC) वक्र L आकार की होती है तो LMC वक्र भी L आकार की होती है तथा सदैव LAC वक्र के नीचे रहती है। LMC व LAC के उत्पादन स्तर पर स्थिर हो जाती है तथा आपस में मिल जाती है।

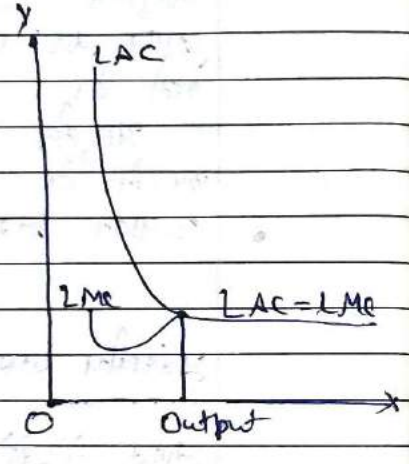

आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार LAC वक्र प्रायः L-आकार का होता है जबकि परंपरागत सिद्धांत के अनुसार यह U-आकार का होता है। आधुनिक सिद्धांत परंपरागत सिद्धांत की तुलना में अधिक वास्तविक है।

लागत वक्रों का महत्व

- उत्पादन संबंधी निर्णय
- प्लांट का चुनाव
- संतुलन उत्पादन
- लाभ या हानि अनुमान

प्रो० वाटसन के अनुसार, "लागत तथा उत्पादन के सिद्धान्त का व्यावसायिक निर्णय लेने तथा सरकार द्वारा एकाधिकार विरोधी नीतियाँ बनाने में बहुत अधिक महत्व है"

Ch-8.

उपयोगिता विश्लेषण

उपयोगिता किसी वस्तु की वह शक्ति है जो आवश्यकता को पूरा करती है।

प्रो० हिब्डन के अनुसार, "उपयोगिता किसी वस्तु का वह गुण है जो आवश्यकता को संतुष्ट करता है।"

श्रीमती रोबिन्सन के अनुसार, "उपयोगिता वस्तुओं का वह गुण है जिसके फलस्वरूप लोग उन्हें खरीदना चाहते हैं"

विशेषताएँ — उपयोगिता की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

- उपयोगिता भावगत है
- उपयोगिता सापेक्षिक है
- उपयोगिता का लाभदायक होना आवश्यक नहीं है।
- उपयोगिता नैतिकता से स्वतंत्र है
- उपयोगिता तथा संतुष्टि में अंतर है।

उपयोगिता की धारणाएँ
Concepts of Utility

किसी वस्तु के उपयोग के आधार पर इसकी तीन धारणाएं हैं

प्रारंभिक उपयोगिता — प्रारंभिक उपयोगिता वह उपयोगिता है जो उपभोग की जाने वाली वस्तु की पहली इकाई से प्राप्त होती है।

कुल उपयोगिता — प्रो० लेफ्टविच के अनुसार, "कुल

$TU_x = f(Q_x)$

उपयोगिता एक वस्तु की विभिन्न मात्राओं के उपभोग से प्राप्त होने वाले संपूर्ण संतोष के बारे में बताती है।"

सीमांत उपयोगिता – किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने से कुल उपयोगिता में जो वृद्धि होती है उसे सीमांत उपयोगिता कहते हैं।

$$MU = \frac{\Delta TU}{\Delta Q}$$

उपयोगिता विश्लेषण के नियम

उपयोगिता विश्लेषण के निम्नलिखित दो मुख्य नियम हैं।

घटती सीमांत उपयोगिता का नियम – घटती सीमान्त उपयोगिता का नियम उपयोगिता विश्लेषण की आधारशिला है। प्रतिदिन के जीवन में अनुभव करते हैं जब आपने पहला पेन लिया होगा तो आपको उससे बहुत अधिक उपयोगिता प्राप्त हुई होगी। जैसे-जैसे आपके पास पेनों की संख्या बढ़ती जाएगी उनसे मिलने वाली सीमांत उपयोगिता कम होती जाएगी। इस वास्तविकता को ही अर्थशास्त्र में घटती सीमांत उपयोगिता का नियम कहा जाता है।

सैम्युअलसन के अनुसार, "जैसे-जैसे किसी वस्तु के उपभोग की मात्रा बढ़ती है, उस वस्तु की सीमांत उपयोगिता कम होने की प्रवृत्ति प्रकट करती है।"

- गणनावाचक विश्लेषण की मान्यताएँ
  - उपयोगिता का गणनावाचक माप संभव है।

- मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर रहती है।
- प्रत्येक वस्तु की सीमांत उपयोगिता स्वतंत्र है।
- वस्तु की उचित मात्रा का उपभोग किया जाता है।
- उपभोग की आय में परिवर्तन नहीं होता है।
- उपभोक्ता की रुचि, स्वभाव फैशन तथा आदतों में परिवर्तन नहीं होता है।

व्याख्या

घटती सीमांत उपयोगिता के नियम की व्याख्या की जा सकती है कि पहली आइसक्रीम खाने से आपको चार इकाई सीमांत उपयोगिता प्राप्त होती है। पहली इकाई पर सीमांत उपयोगिता अधिक होगी। धीरे-धीरे कम होती जाएगी।

घटती सीमांत उपयोगिता का नियम

आइसक्रीम की संख्या	सीमांत उपयोगिता
1	4
2	3
3	2
4	1
5	0
6	-1

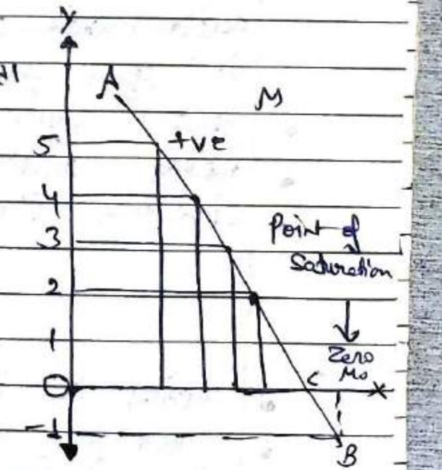

अपवाद (Exceptions)

कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार घटती सीमांत उपयोगिता के नियम के निम्नलिखित अपवाद हैं।

- दुर्लभ तथा विचित्र वस्तुएँ
- कंजूस व्यक्ति
- अच्छी पुस्तक या कविता
- शराबी व्यक्ति

टॉजिग के अनुसार, " घटती सीमांत उपयोगिता के नियम की प्रकृति इतनी व्यापक है कि इस नियम को सर्वव्यापी कहना गलत नहीं होगा।

नियम लागू होने के कारण

घटते सीमांत उपयोगिता के नियम के लागू होने के मुख्य कारण निम्न हैं –

- वस्तुएँ अपूर्ण स्थानापन्न होती हैं।
- विशेष आवश्यकताओं की संतुष्टि
- वैकल्पिक प्रयोग

नियम का महत्व

- उपभोग के नियमों का आधार
- उत्पादन तथा उपभोग में विविधता
- कीमत निर्धारण
- उपभोक्ता को लाभ
- समाजवाद का आधार

आलोचनाएँ

- उपयोगिता का गणनावाचक माप संभव नहीं है
- मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर नहीं रहती
- प्रत्येक वस्तु एक स्वतंत्र वस्तु नहीं है।
- अवास्तविक मान्यताएँ

सम-सीमांत उपयोगिता का नियम

सम-सीमांत उपयोगिता का नियम उपयोगिता विश्लेषण का दूसरा महत्वपूर्ण नियम है। इस नियम के अनुसार एक उपभोक्ता अपनी आय को खर्च करके अधिकतम संतुष्टि प्राप्त कर सकता है।
प्रो० लिप्सी के अनुसार,
" एक उपभोक्ता जो अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करना चाहता है विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार व्यय का बँटवारा करेगा कि प्रत्येक वस्तु पर खर्च होने वाली अंतिम पैनी से मिलने वाली उपयोगिता बराबर हो।"

मान्यताएँ

सम-सीमांत उपयोगिता के नियम की मुख्य मान्यताएँ निम्न प्रकार हैं –

- उपयोगिता को गणनावाचक संख्याओं में मापा जा सकता है।
- उपभोक्ता विवेकशील है
- मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर रहती है
- वस्तुओं की कीमत स्थिर रहती है

व्याख्या

इस नियम की व्याख्या तालिका व चित्र द्वारा की जा सकती है। मान लीजिए एक व्यक्ति की आय ₹ 5 है। वह अपनी इस सीमित आय को दो

वस्तुओं आम तथा दूध पर खर्च करना चाहता है।

सम-सीमांत उपयोगिता का नियम

खर्च किये गए रुपये	आमों की सीमांत उपयोगिता	दूध की सीमांत उपयोगिता
1	12	10
2	10	8
3	8	6
4	6	4
5	4	2

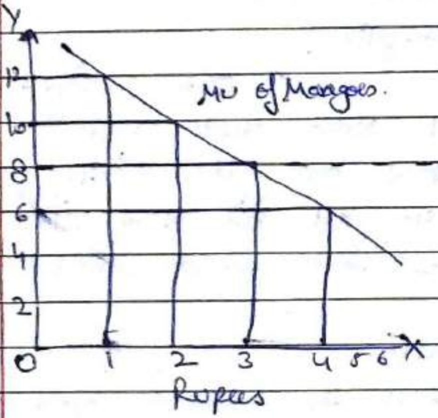

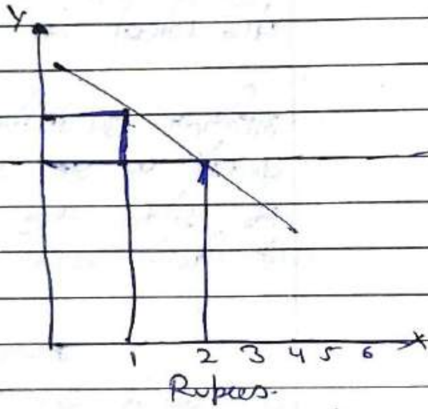

नियम का महत्व

इस नियम का अर्थशास्त्र में बहुत अधिक महत्व है। रोबिन्स ने इसे अर्थशास्त्र का आधार कहा है। मार्शल के अनुसार, "प्रतिस्थापन का नियम आर्थिक जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में लागू होता है।"

- उपभोग
- उत्पादन
- विनिमय
- वितरण
- राजस्व
- संपत्ति वितरण
- समय का वितरण

नियम की आलोचनाएँ

सम-सीमांत उपयोगिता के नियम की मुख्य आलोचनाएँ निम्न हैं।

- उपभोक्ता पूरी तरह विवेकशील नहीं होते।
- वस्तुओं की कमी
- उपभोक्ता का हिसाबी न होना
- वस्तुओं की कमी
- फैशन, रीति-रिवाजों तथा आदतों का प्रभाव
- उपभोक्ता की अज्ञानता
- अनिश्चित बजट
- आय तथा कीमतों का स्थिर होना
- वस्तुओं की अविभाज्यता
- उपयोगिता का गणनावाचक माप संभव नहीं है
- पूरक वस्तुएँ
- मुद्रा की सीमांत उपयोगिता में परिवर्तन

प्रो. चैपमैन के अनुसार, "सम-सीमांत उपयोगिता के नियम के अनुसार हम अपनी आय को वितरण करने के लिये उस प्रकार मजबूर नहीं होते जिस प्रकार एक पत्थर

को ऊपर फेंके जाने पर नीचे गिरने के लिये मजबूर होना पड़ता है। परंतु चूंकि हम विवेकशील हैं इसलिए हम इस नियम के अनुसार काम करते हैं।"

उपभोक्ता संतुलन – उपयोगिता विश्लेषण

प्रो० टाइबर सिटोवस्की के अनुसार, "एक उपभोक्ता उस समय संतुलन की अवस्था में होता है जब वह अपने व्यवहार को वर्तमान परिस्थितियों में सबसे अच्छा मानता है तथा उसमें, जब तक परिस्थितियों में परिवर्तन ना हो, कोई परिवर्तन करना पसंद नहीं करता।"

मान्यताएँ

उपभोक्ता संतुलन का उपयोगिता विश्लेषण निम्न मान्यताओं पर आधारित है।

- विचारवान उपभोक्ता
- गणनावाचक उपयोगिता
- प्रत्येक वस्तु से प्राप्त होने वाली उपयोगिता स्वतंत्र होती है
- मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर है
- आय तथा कीमत स्थिर रहती है
- उपभोक्ता की रुचि स्थिर रहती है।
- पूर्ण ज्ञान

उपभोक्ता संतुलन का निर्धारण

उपयोगिता विश्लेषण के द्वारा एक उपभोक्ता संतुलन की स्थिति को तीन अवस्थाओं में ज्ञात किया जा सकता है —

एक ~~वस्तु~~ ही वस्तु जिसका केवल एक ही प्रयोग किया जाए —

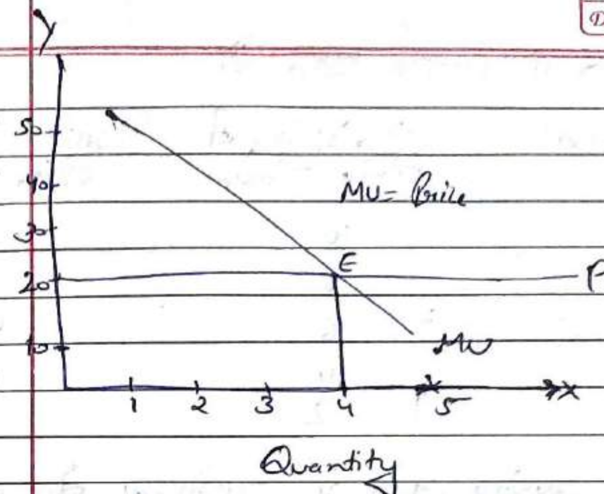

एक प्रयोग वाली किसी वस्तु के लिये उपभोक्ता संतुलन

x वस्तु की इकाइयाँ	x वस्तु के उपभोग से प्राप्त उपयोगिता	त्यागी जाने वाली उपयोगिता	प्राप्त एवं त्यागी उपयोगिता से आधिक्य
1	50	20	30
2	40	20	20
3	30	20	10
4	20	20	0
5	10	20	−10

जब उपभोक्ता वस्तु-x की चार इकाइयाँ खरीदता है तो उसे मिलने वाली सीमांत उपयोगिता तथा कीमत के रूप में त्याग की जाने वाली उपयोगिता एक दूसरे के बराबर होती है। उपभोक्ता E बिंदु पर संतुलन की अवस्था में होगा जहाँ आइसक्रीम की कीमत 20 पैसे तथा चौथी आइसक्रीम की सीमांत उपयोगिता बराबर है।

विभिन्न उपयोगिता वाली वस्तु के लिये उपभोक्ता संतुलन– इसके द्वारा एक वस्तु का विभिन्न उपयोगों में इस प्रकार बंटवारा करना चाहता

जिससे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो

तेल की मात्रा	स्टोव में तेल की सीमांत उपयोगिता	लालटेन में तेल की सीमांत उपयोगिता
1	10	8
2	8	6
3	6	4
4	4	2
5	2	1

इस प्रकार उपभोग करने से उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होगी। इसका कारण यह है कि उपभोक्ता तेल का विभिन्न उपयोगों में इस प्रकार उपयोग कर रहा है कि प्रत्येक उपभोग से मिलने वाली सीमांत उपयोगिता बराबर है।

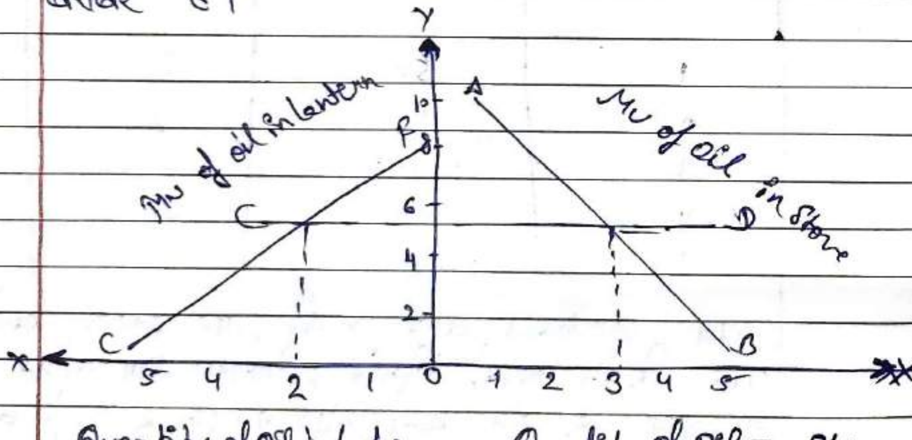

Quantity of Oil in Lantern   Quantity of Oil In Stove.

यदि वह दो गैलन तेल का प्रयोग लालटेन में तथा तीन लीटर तेल का प्रयोग स्टोव में करेगा, तो उसे समान उपयोगिता प्राप्त होगी जैसे कि CD रेखा द्वारा दिखाया गया है।

(iii) विभिन्न वस्तुएँ — जब एक उपभोक्ता अपनी निश्चित आय को एक से अधिक वस्तुओं पर व्यय करता है तो इष्टतम

संतुष्टि के लिये वह विभिन्न वस्तुओं से मिलने वाली सीमांत उपयोगिताओं का तुलनात्मक अध्ययन करता है।

उपभोक्ता संतुलन - विभिन्न वस्तुएँ

खर्च किये गये रुपये	x वस्तु की सीमांत उपयोगिता	y- वस्तु की सीमांत उपयोगिता
1	12	10
2	10	8
3	8	6
4	6	4
5	4	2

तालिका में उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में वस्तु-x पर ₹3 तथा वस्तु-y पर ₹2 खर्च करेगा। इस प्रकार उपभोक्ता को अंतिम इकाई से समान संतुष्टि प्राप्त होगी।

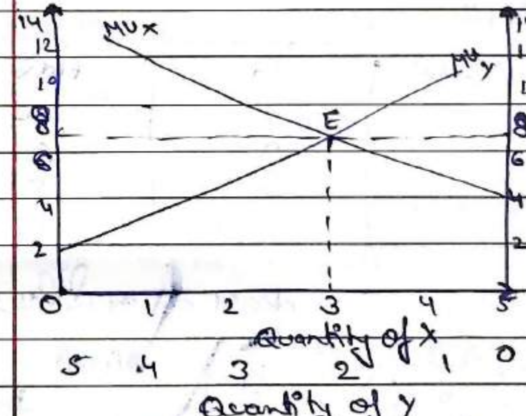

चित्र से स्पष्ट है कि उपभोक्ता का संतुलन E बिंदु पर होगा, जहाँ पर उपभोक्ता x वस्तु की 3 तथा y वस्तु की 2 इकाइयों का उपभोग करता है तथा दोनों इकाइयों से प्राप्त सीमांत उपयोगिता समान (8) है।

गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण की आलोचनाएँ

प्रो. एजवर्थ, पैरेटो, हिक्स एलन सैम्युलसन आदि अर्थशास्त्रियों ने गणनावाचक उपयोगिता की निम्न कारणों से आलोचना की है

- उपयोगिता भावगत है
- प्रत्येक वस्तु एक स्वतंत्र वस्तु नहीं है
- मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर नहीं रहती
- उपभोक्ता को कंप्यूटर के समान माना है।
- गिफन विरोधाभास की व्याख्या नहीं करता
- बहुत अधिक मान्यताएँ
- उपयोगिता का गणनावाचक माप संभव नहीं।

Ch-9

तटस्थता वक्र विश्लेषण

Indifference Curve Analysis.

तटस्थता वक्र - एक तटस्थता वक्र पर जितने बिंदु होते हैं वे दो वस्तुओं के उन संयोगों को प्रकट करते हैं जिनसे उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है।

लेफ्टविच के अनुसार, "एक तटस्थता वक्र x तथा y वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को प्रकट करती है जो उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करते हैं।"

तटस्थता अनुसूची

मेयर्स के अनुसार, "तटस्थता तालिका वस्तुओं के ऐसे विभिन्न संयोगों की तालिका होती है जो किसी व्यक्ति को समान रूप से संतुष्टि प्रदान करेंगे।"

सेबों तथा संतरे के संयोग	सेब	संतरे
A	1	10
B	2	7
C	3	5
D	4	4

तटस्था वक्र का चित्रीय प्रस्तुतीकरण

विभिन्न बिंदु A, B, C तथा D सेबों तथा संतरों के ऐसे संयोगों को प्रकट कर रहे हैं। जिनसे कि उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त हो रही है। इसलिए इसे वक्र को समान उपयोगिता वक्र भी कहा जाता है।

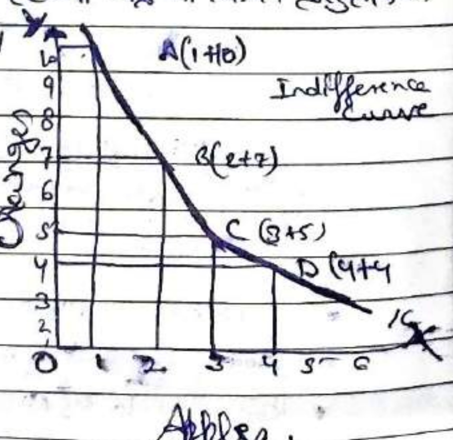

उपभोक्ता के संतुलन पर वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन का प्रभाव

उपभोक्ता के संतुलन पर उनकी आय, प्रतिस्थापन वस्तुओं की कीमत तथा उपभोग की गई वस्तु की कीमत में परिवर्तन का भी प्रभाव पड़ता है।

- आय प्रभाव • प्रतिस्थापन प्रभाव • कीमत प्रभाव

आय प्रभाव

यदि सापेक्ष कीमतें स्थिर रहती हैं तो उपभोक्ता की आय में परिवर्तन होने के फलस्वरूप उसके द्वारा खरीदी गई वस्तु की मात्राओं पर जो प्रभाव पड़ता है उसे आय प्रभाव कहते हैं।

- सामान्य वस्तुओं के मामले में आय प्रभाव- आय बढ़ने के साथ माँगी गई मात्रा बढ़ती है और आय घटने पर यह घटती है। इस वृद्धि या कमी के कारण यह इन मान्यताओं पर आधारित है।
(i) दोनों वस्तुएँ सामान्य वस्तुएँ हैं (ii) दोनों वस्तुओं की कीमतें स्थिर हैं।

(1) आय में वृद्धि के फलस्वरूप आय प्रभाव -

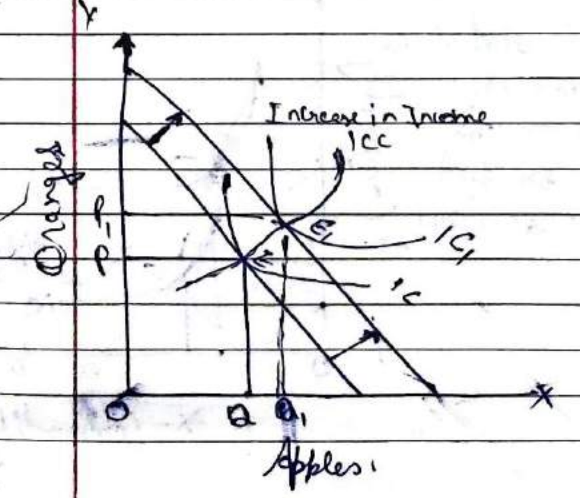

आय में वृद्धि के फलस्वरूप उपभोक्ता की संतुष्टि में वृद्धि होती है। आय में वृद्धि के फलस्वरूप बिंदु ऊपर दाईं ओर खिसक कर E से E₁ हो जाता है। आय उपभोग वक्र उपभोक्ता के संतुलन पर आय में परिवर्तन के कारण आय प्रभाव को प्रतिबिम्बित करती है, जबकि

सापेक्षित कीमतें समान रहती हैं।

आय में कमी के फलस्वरूप आय प्रभाव —

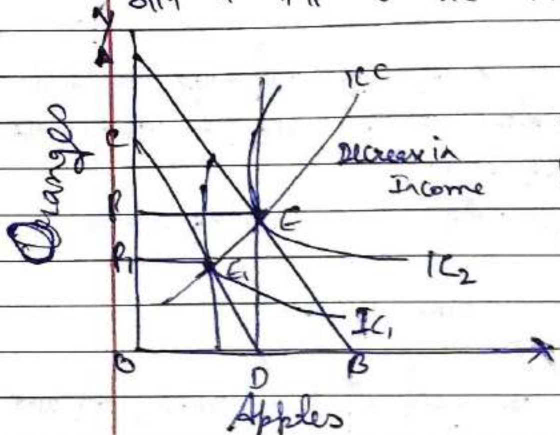

आय में कमी उपभोक्ता की संतुष्टि को कम कर देती है इसके फलस्वरूप संतुलन बिंदु नीचे बाईं ओर सरक कर E से E1 हो जाता है जैसा कि आय उपभोग वक्र ICC द्वारा दिखाया गया है।

निम्नकोटि वस्तुओं के मामले में आय प्रभाव

आय बढ़ने पर माँग कम हो जाती है और आय कम होने पर माँग बढ़ जाती है। यह इन मान्यताओं पर आधारित है।

(i) वस्तु-X निम्नकोटि की वस्तु है जबकि वस्तु-Y सामान्य वस्तु है।

(ii) दोनों वस्तुओं की कीमत स्थिर या समान रहती है।

जब आय में वृद्धि होती है तब निम्नकोटि की वस्तु का उपभोग कम होता है इसके विपरीत जब आय कम होगी तो इनका उपभोग बढ़ जायेगा।

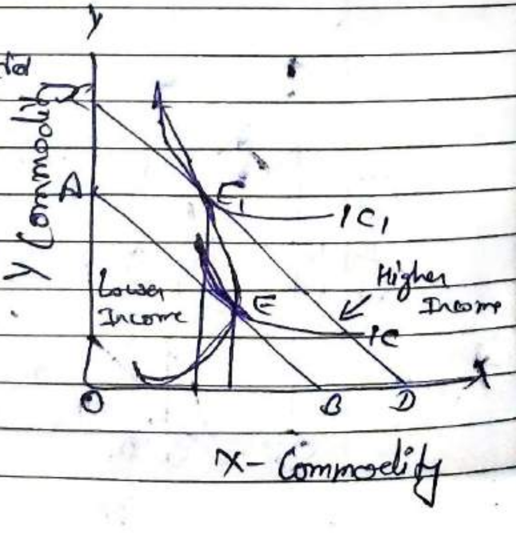

आय उपभोग वक्र

फर्ग्यूसन के अनुसार, "आय उपभोग वक्र वह वक्र है जो मौद्रिक आय के विभिन्न स्तरों तथा स्थिर कीमतों के परिणामस्वरूप प्राप्त संतुलन के बिंदुओं को दर्शाती है।"

वक्र का ढलान

आय उपभोग वक्र का ढलान सामान्य वस्तुओं के लिये धनात्मक तथा निम्नकोटि वाली वस्तुओं के लिये ऋणात्मक होता है।

धनात्मक ढलान –

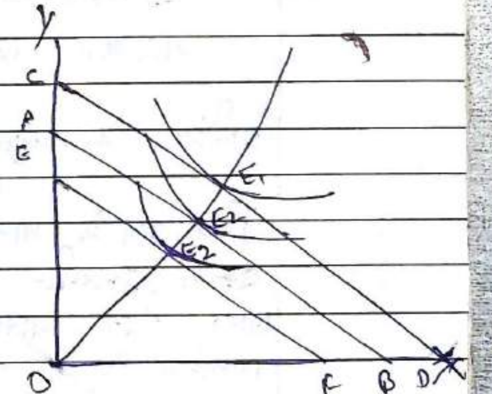

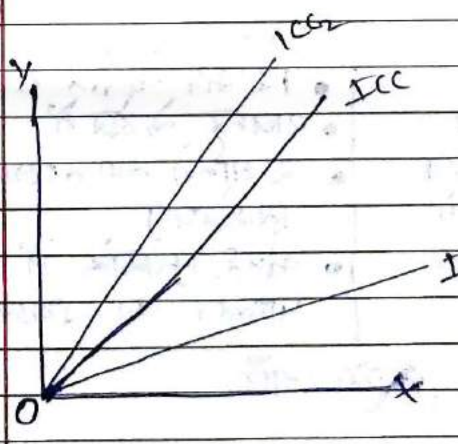

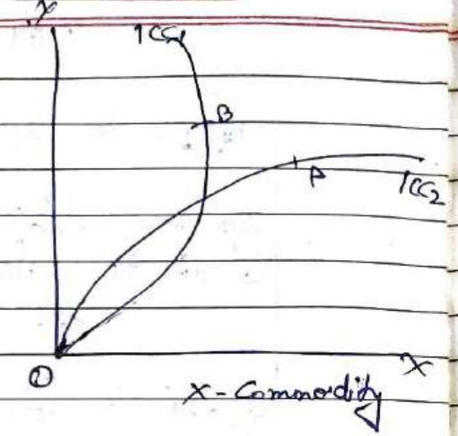

तटस्थता वक्र विश्लेषण के उपयोग अथवा महत्व

बोल्डिंग के अनुसार, " तटस्थता वक्र विश्लेषण, आर्थिक विश्लेषण का, एक शक्तिशाली शस्त्र है। अर्थशास्त्र अंतिम रूप में मानव चुनाव का सिद्धांत है। इस दृष्टि से इसके अन्तर्गत जीवन का केवल एक ही भाग नहीं बल्कि सारा जीवन आता है और तटस्थता वक्र मानव चुनाव का मानचित्र है

• उपभोग के क्षेत्र में	• विनिमय के क्षेत्र में
• उपभोक्ता की बचत	• राजस्व के क्षेत्र में
• माँग की पूर्ण व्याख्या	• राशनिंग तथा तटस्थता वक्र विश्लेषण
• उत्पादन के क्षेत्र में	• कीमत सूचकांक में होने वाली परिवर्तन का प्रभाव
• आर्थिक कल्याण पर प्रभाव	

आलोचनाएँ

अवास्तविक मान्यताएँ
जटिल विश्लेषण
काल्पनिक

- अवास्तविक मान्यताएँ
- जटिल विश्लेषण
- काल्पनिक
- जोखिम वाले संयोग
- भावगत
- तटस्थता का आधार
- अल्पव्यवहारिक
- हानिप्रद संयोग
- अधिकतम संतुष्टि की अवास्तविक मान्यता
- नई बोतल में पुरानी शराब
- उन्नोतरता
- घटती सीमांत उपयोगिता की अवश्यम्भाविता

उपयोगिता विश्लेषण की अपेक्षा, तटस्थता वक्र विश्लेषण उपभोक्ता के व्यवहार के विश्लेषण का एक सुधरा हुआ रूप है। ~~परंतु यह भी एक~~

Ch-10

बाजार संरचना

Market Structure

अर्थशास्त्र में बाजार शब्द से अभिप्राय किसी विशेष स्थान से नहीं बल्कि एक ऐसे क्षेत्र से है जहाँ किसी वस्तु की सारे बाजार में एक ही कीमत स्थापित होने की प्रवृत्ति होती है।

प्रो० चैपमैन के अनुसार, "बाजार शब्द अवश्य ही किसी विशेष स्थान की ओर संकेत करता परंतु सदा वस्तुओं और उनके क्रेताओं एवं विक्रेताओं की ओर संकेत करता है, जिनमें प्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे से प्रतियोगिता पाई जाती है।"

बाजार संरचना के प्रमुख प्रकार

प्रतियोगिता के आधार पर बाजार को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है:

पूर्ण प्रतियोगी   एकाधिकारी   अपूर्ण प्रतियोगिता

बाजार के प्रकार
- पूर्ण प्रतियोगिता
- अपूर्ण प्रतियोगिता
  - एकाधिकारी प्रतियोगिता
  - द्वैताधिकार
  - अल्पाधिकार
- एकाधिकार

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार — पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की उस स्थिति को कहते हैं, जिसमें किसी समरूप वस्तु के बहुत से क्रेता तथा विक्रेता हैं तथा वस्तु की कीमत उद्योग द्वारा निर्धारित होती है।

परिभाषा

श्रीमती जोन रॉबिन्सन के अनुसार, "पूर्ण प्रतियोगिता तब पाई जाती है जबकि प्रत्येक उत्पादक के उत्पादन के लिये माँग पूर्णतः मूल्य सापेक्ष हो।"

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ तथा मान्यताएँ — पूर्ण प्रतियोगिता की मुख्य विशेषताएँ तथा मान्यताएँ निम्न हैं —

- क्रेताओं और विक्रेताओं की अधिक संख्या परंतु छोटा आकार
- समरूप वस्तुएँ
- पूर्ण ज्ञान
- फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश व छोड़ना
- पूर्ण गतिशीलता
- समान कीमत

एकाधिकार

एकाधिकार बाजार की वह स्थिति है जिसमें किसी वस्तु या सेवा का केवल एक ही उत्पादक होता है तथा उस वस्तु का कोई निकटतम प्रतिस्थापन नहीं होता।

एकाधिकार की विशेषताएँ तथा मान्यताएँ — एकाधिकार की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं —

एक विक्रेता तथा अधिक क्रेता
एकाधिकारी फर्म उद्योग भी है
नई फर्मों के प्रवेश पर प्रतिबंध
निकटतम स्थानापन्न का अभाव
कीमत निर्धारक
कीमत विभेद

अपूर्ण प्रतियोगिता बाजार

प्रो॰ फेयरचाइल्ड के अनुसार, "यदि कोई बाजार संगठित नहीं है, यदि खरीदने वालों और बेचने वालों में कठिनाई से संपर्क स्थापित होता है तथा वे एक दूसरे की खरीदी हुई वस्तुओं तथा दी हुई कीमतों की तुलना नहीं कर सकते, तो हम अपूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति का सामना करेंगे।"

निम्न अवस्थाएँ इसमें सम्मिलित की जाती हैं -

① एकाधिकारी प्रतियोगिता - यह बाजार की वह स्थिति है जिसमें किसी वस्तु के बहुत से विक्रेता होते हैं परंतु प्रत्येक विक्रेता की वस्तु दूसरे विक्रेताओं की वस्तुओं से किसी न किसी रूप में भिन्न होती है।

एकाधिकारी प्रतियोगिता की विशेषताएँ

- फर्मों तथा क्रेताओं की अधिक संख्या
- वस्तु विभेद
- फर्मों के प्रवेश करने और छोड़ने की स्वतंत्रता
- विक्रय लागत
- कीमत नियंत्रण
- सीमित गतिशीलता

द्वयाधिकार - द्वयाधिकार बाजार की उस अवस्था को कहते हैं जिसमें एक वस्तु के केवल दो उत्पादक होते हैं।

अल्पाधिकार - अल्पाधिकार बाजार की वह अवस्था है जिसमें एक वस्तु के कुछ उत्पादक होते हैं।

बाजार की मुख्य विशेषताएँ

- क्षेत्र
- क्रेता और विक्रेता
- एक वस्तु
- स्वतंत्र प्रतियोगिता

बाजार के वर्गीकरण का आधार

बाजार में विभिन्न प्रकारों के निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बाजार का विस्तृत रूप से वर्गीकरण तीन प्रकारों में किया जाता है।

- बाजार में क्रेताओं और विक्रेताओं की संख्या
- वस्तु की प्रकृति
- कीमत नियंत्रण की डिग्री
- बाजार का ज्ञान
- साधनों की गतिशीलता

Q. फर्म से आपका क्या आशय है? एक फर्म के मूलभूत उद्देश्यों का विस्तारपूर्वक वर्णन करें?

प्रो० वाटसन के अनुसार, "फर्म वह इकाई है जो लाभ प्राप्त करने की इच्छा से बिक्री के लिये उत्पादन करती है इसका उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना होता है।

प्रो० हैन्सन के अनुसार, "एक फर्म उस समय संतुलन में होगी जब उत्पादन में कमी करना या वृद्धि करना उसके लिये लाभकारी नहीं होगा।"

फर्म का उद्देश्य लाभ अधिकतम करना है।
लाभ अधिकतम करने के उद्देश्य के पक्ष में तर्क

परम्परावादी अर्थशास्त्री लाभ अधिकतम करने के उद्देश्य का समर्थन निम्न आधारों पर करते है।

- सबसे दृढ़ प्रयोजन
- फर्म के अस्तित्व के लिये आवश्यक
- अनुभवजन्य तथ्यों पर आधारित
- फर्मों के समूह व्यवहार की उचित व्याख्या
- भावी अनुमान की योग्यता
- फर्म की कुशलता

आलोचनाएं

लाभ अधिकतम करने के उद्देश्य की आलोचना निम्न आधारों पर की जाती है।

- लाभ अनिश्चितता
- पूर्ण ज्ञान का अभाव
- स्थैतिक सिद्धान्त
- अल्पाधिकार में संभव नहीं है

- फर्मों को MC तथा MR के बारे में ज्ञान नहीं होता
- विभिन्न उद्देश्य
  स्वामित्व का नियंत्रण से पृथक्करण